RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
मार्गशीर्ष-पौष, विक्रम संवत् 2081 (दिसम्बर -2024)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

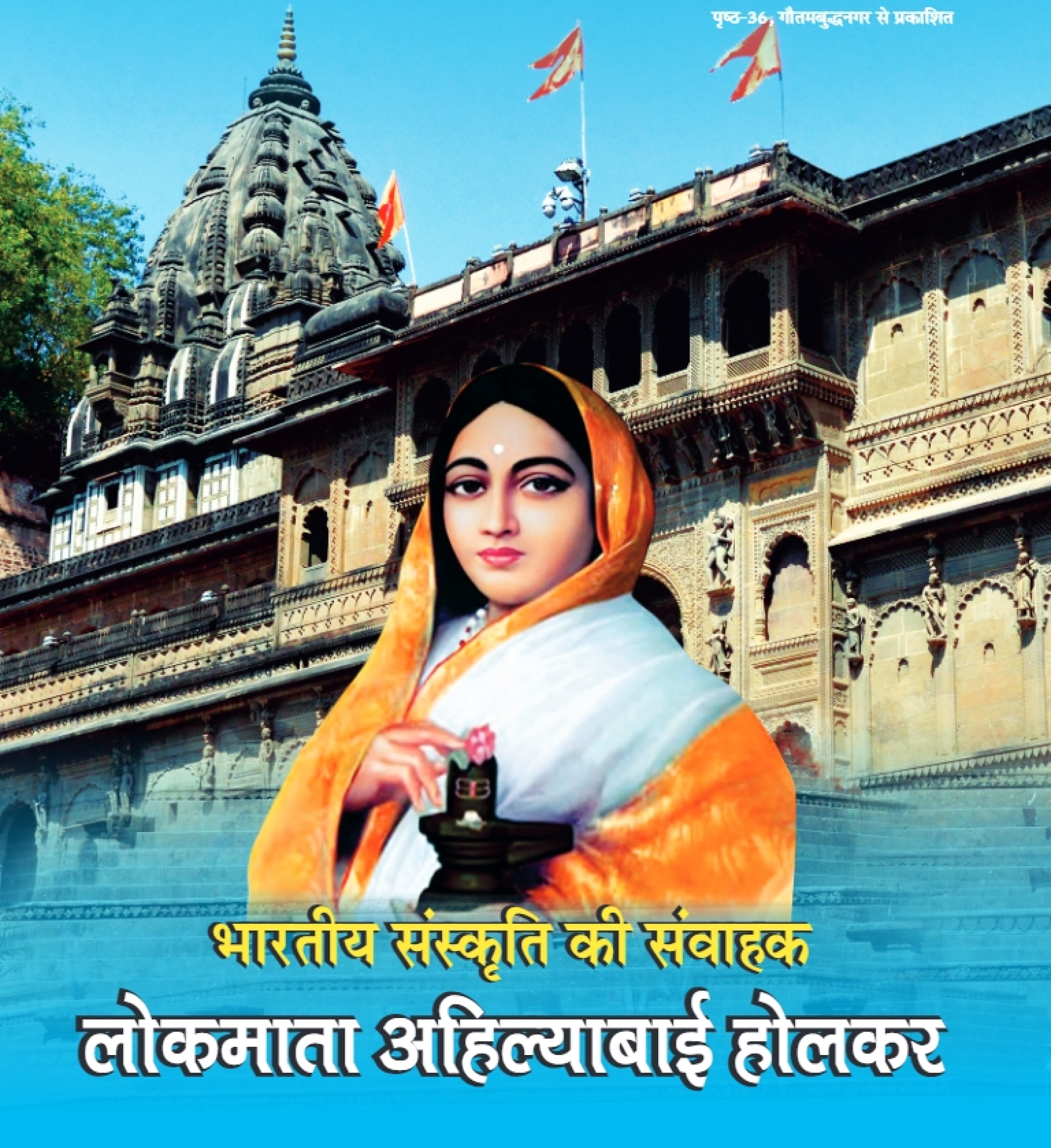

भारतीय संस्कृति की संवाहक
लोकमाता अहिल्याबाई होलकर

भारतीय विकास के बढ़ते क्षेत्रों में ड्रोन के उपयोग

BETTER DRONES
Achievable Altitude

सर्वेक्षण से निरीक्षण, विद्युत क्षेत्र से लेकर भारतीय रेल तक

2019 में स्थापित, बेटरड्रोन्स एक अग्रणी सेवा प्रदाता है जो एकाधिक क्षेत्र के लिए ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स समाधान में विशेषज्ञता रखता है। हम निरीक्षण और सर्वेक्षण के लिए अपने क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म का लाभ उठाते हुए, सर्वेक्षण और निरीक्षण में व्यापक सहायता प्रदान करते हैं।

हमारी विशेषज्ञता विद्युत उत्पादन, ट्रांसमिशन और वितरण क्षेत्र तक फैली हुई है, जहां हम निरीक्षण से जुड़ी जटिल समस्याओं के समाधान के लिए उन्नत ड्रोन, सेंसर और LiDAR, विज़ुअल, थर्मल और आंशिक डिस्चार्ज कैमरा जैसी तकनीकों का उपयोग करते हैं।

More Information at info@betterdrones.in
B-214, Noida One, B-8, Sector - 62, Noida - 201309, Uttar Pradesh
+91-7838525424 | 8448020706

इस अंक में

सामाजिक योद्धा थीं लोकमाता अहिल्याबाई -07

संघ स्थापना में भारत की सर्वांग स्वतंत्रता -22

स्वतंत्रता आन्दोलन में संघ की भूमिका पर झूठा नैरेटिव क्यों?- 24

प्रेरणा विमर्श आयोजन की झलकियां - 26

कल्याणकारी राज्य की प्रेरणा लोकमाता अहिल्याबाई....05

सनातन राज-व्यवस्था की संरक्षिका 08

सेवा की प्रतिमूर्ति-शिव साधिका....10

एक साधारण कन्या की राजश्री से राजऋषि तक की यात्रा 12

सामाजिक समरसता की प्रेरणा पुंज....14

भारतीयता की प्रखर हस्ताक्षर अहिल्याबाई होलकर....16

शक्ति व नीति की जीवंत प्रतीक....17

संघ के विचार, व्यवहार और दर्शन का विस्तार काल....18

पंच परिवर्तन के प्रेरक....21

ट्रंप का राष्ट्रपति चुना जाना भारत के लिए सुखद....28

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत के लिए अवसर और चुनौतियां 30

संस्कृति और आंचलिकता का माह 32

प्राचीन धरोहरों की खोज में अवसर....34

प्रेरणा विचार

वर्ष -2, अंक - 12

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित।

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

वीरता, त्याग और सनातन संस्कृति की प्रहरी

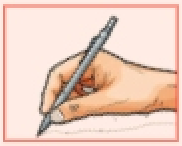

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार, हिन्दू संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर निर्मित है। आध्यात्मिकता जैसी मजबूत नींव के कारण ही सनातन भारतीय संस्कृति का प्रवाह अनंत काल से अविरल एवं निरंतर बना हुआ है। यद्यपि वर्ष 712 से शुरू हुए भारतीय संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के षड्यन्त्र वर्ष 1947 में मिली स्वाधीनता के बाद अभी तक तक जारी हैं, तथापि 1300 से अधिक वर्षों के इस कालखंड में भारत सांस्कृतिक उत्थान और पतन के अनेक दौर से गुजरा परंतु आक्रान्ताओं के सनातन संस्कृति को नष्ट करने के षड्यंत्र सफल नहीं हो सके। ऐसा इसलिए संभव हो सका क्योंकि जिस तीव्रता और क्रूरता से आक्रान्ता इसे नष्ट करने का प्रयास करते थे, उससे ज्यादा जिजीविषा से भारत माता की संतानें इसे अक्षुण्ण रखने के लिए संघर्षरत तथा सर्वस्व बलिदान के लिए संकल्पित रहती थीं।

एक आंकड़े के अनुसार सनातन संस्कृति को नष्ट करने के लिए वर्ष 1000 से 1525 की अवधि में लगभग 10 करोड़ सनातनियों की हत्या हुई। संघर्ष के इस कालखंड में जितनी क्रूरता से आक्रांता सांस्कृतिक स्थलों, प्रतीकों आदि का विनाश करते, उतनी ही ज्यादा दृढ़ता से संस्कृति के संरक्षण के प्रयास भी होते। संस्कृति संरक्षण के इन प्रयासों में भारतीय मातृशक्ति भी पीछे नहीं रहीं। संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को समर्पित ऐसा ही एक नाम है 11 दिसंबर 1767 को मालवा राज्य का शासन संभालने वाली लोकमाता अहिल्याबाई होलकर। अपने पति, श्वसुर और पुत्र की मौत का दंश झेल कर मालवा का राजकाज संभालने वाली लोकमाता ने सुशासन, जनकल्याण, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक उत्थान तथा जनसेवा को समर्पित राज्य का उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अन्य राजाओं और समूचे विश्व के लिए भी एक आदर्श था। वीरता, त्याग, देशभक्ति और सनातन संस्कृति के लिए समर्पित अहिल्याबाई ने अनेक मठों, मंदिरों, घाटों, धर्मशालाओं आदि का निर्माण कराया। वह लगातार राष्ट्र को एकजुट रखने के लिए कार्य करती रहीं। सांस्कृतिक महत्व के जिन स्मारकों, पूजा स्थलों आदि को आक्रान्ताओं ने ध्वस्त किया उनके पुनर्निर्माण का कार्य भी उन्होंने किया। जिससे नई पीढ़ी सांस्कृतिक जड़ों से न कट जाए। वह भारतीय जीवन मूल्यों की प्रबल पक्षधर थीं। अत: उन्होंने सामाजिक समरसता स्थापित करने पर विशेष जोर दिया। अपनी प्रजा के लिए उन्होंने भारी संख्या में मंदिर, कुएं, बावड़ी, धर्मशालाएं आदि बनवाईं। काशी का वर्तमान काशी विश्वनाथ मंदिर 1780 में उन्होंने ही बनवाया था। परंतु अन्य राजाओं के उलट अहिल्याबाई ने न केवल अपने राज्य में अपितु अन्य राज्यों में भी तीर्थ स्थानों एवं सांस्कृतिक स्थलों का निर्माण तथा जीर्णोद्धार कराया।

आज जब अनेक सांस्कृतिक मान बिंदुओं को हम भारत में धूल-धूसरित स्थिति में देखते हैं या अन्य देशों में मंदिरों, गुरुद्वारों और बौद्ध स्थलों पर आक्रमण की घटनाएं सुनते हैं, समाज को जातियों, क्षेत्रों और भाषाओं के नाम पर पर विखंडित करने के कुत्सित प्रयास होते हैं तो अहिल्याबाई होलकर आज और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। आशा है अहिल्याबाई होलकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित प्रेरणा विचार पत्रिका का यह अंक सुधि पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। ■

लोकमाता ने सुशासन, जनकल्याण, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक उत्थान तथा जनसेवा को समर्पित राज्य का उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अन्य राजाओं और समूचे विश्व के लिए भी एक आदर्श था। वीरता, त्याग, देशभक्ति और सनातन संस्कृति के लिए समर्पित अहिल्याबाई ने अनेक मठों, मंदिरों, घाटों, धर्मशालाओं आदि का निर्माण कराया। वह लगातार राष्ट्र को एकजुट रखने के लिए कार्य करती रहीं। सांस्कृतिक महत्व के जिन स्मारकों, पूजा स्थलों आदि को आक्रान्ताओं ने ध्वस्त किया उनके पुनर्निर्माण का कार्य भी उन्होंने किया। जिससे नई पीढ़ी सांस्कृतिक जड़ों से न कट जाए। वह भारतीय जीवन मूल्यों की प्रबल पक्षधर थीं। अत: उन्होंने सामाजिक समरसता स्थापित करने पर विशेष जोर दिया।

कल्याणकारी राज्य की प्रेरणास्रोत लोकमाता अहिल्याबाई

शिवेश प्रताप
लोकनीति व संस्कृति के अध्येता एवं लेखक

पश्चिमी विश्व में कल्याणकारी राज्य की संकल्पना अहिल्याबाई की मृत्यु के 125 वर्ष बाद अस्तित्व में आयी एवं द्वितीय विश्वयुद्ध में इसे व्यापक स्वीकृति मिली। पश्चिम के अनुसार राजा का अर्थ केवल शासन और शक्ति से अभिहित होता है। इसलिए मैलकम ने अपने प्रारंभिक विचारों में कहा था कि अहिल्याबाई का अधिक ध्यान राज्य के विस्तार की ओर होना चाहिए था। हालांकि, बाद में समकालीन विद्वानों और बुद्धिजीवियों से भारतीय दृष्टि विकसित कर चुके मैलकम ने अपना दृष्टिकोण बदल लिया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अहिल्याबाई के धार्मिक और कल्याणकारी कार्यों के कारण ही वे जनता में पूजनीय बन लोकमाता कहलाईं।

आज से ढाई सौ वर्ष पूर्व लोकमाता अहिल्याबाई एक शासक के रूप में न केवल अपने राज्य में, बल्कि सम्पूर्ण भारत में अनेक धार्मिक और कल्याणकारी कार्य कर रही थीं, परन्तु किसी शासक का यह आचरण पश्चिमी विश्व के लिए अनोखा था क्योंकि वह भारत की सांस्कृतिक जीवन दृष्टि और धर्मशील शासन से परिचित नहीं थे। पश्चिमी इतिहासकार जैसे सर जॉन मैलकम और अहिल्याबाई की पहली जीवनी लिखने वाले इतिहासकार तथा ग्रांट डफने जैसे इतिहासकारों का मानना था कि अहिल्याबाई को धार्मिक कार्यों पर पैसा खर्च करने के बजाय अपनी सेना को मजबूत करना चाहिए था और अपने राज्य का विस्तार करना चाहिए था।

अहिल्याबाई ने करुणामूर्ति बन न्यायपूर्ण शासन किया। यह प्रयोग न केवल भारतीय इतिहास में बल्कि विश्व के इतिहास में भी बेजोड़ है। लोकमाता ने स्नेह, धार्मिकता और बुद्धिमत्ता के आधार पर कल्याणकारी राज्य का एक उच्च उदाहरण प्रस्तुत किया।

इसके इतर भारतीय इतिहासकारों जैसे कि विश्वनाथ नारायण देव और वासुदेव ठाकुर आदि ने अहिल्याबाई की धार्मिक और कल्याणकारी नीतियों का जोरदार समर्थन किया है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अहिल्याबाई के 30 वर्षों के शासन में जो शांति और आनंद प्रजा को प्राप्त हुआ, वह उस स्थिति में भी प्राप्त नहीं होता अगर अहिल्याबाई ने अपनी धनराशि का दोगुना भाग सेना बढ़ाने और अपने राज्य का विस्तार करने पर खर्च किया होता। आज शस्त्रीकरण की समस्या से जूझते सम्पूर्ण विश्व के लिए अहिल्याबाई की शासन पद्धति एक उम्मीद की किरण है।

अहिल्याबाई का शासन भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय प्रयोग था। राज्य की बागडोर एक समर्पित और धार्मिक नारी शक्ति के हाथों में थी। अहिल्याबाई ने करुणामूर्ति बन न्यायपूर्ण शासन किया। यह प्रयोग न केवल भारतीय इतिहास में बल्कि विश्व के इतिहास में भी बेजोड़ है। अहिल्याबाई ने अपनी सॉफ्ट पावर के माध्यम से शक्ति संतुलन स्थापित किया था जो उनके समय से बहुत आगे होने का प्रमाण है। महेश्वर दरबार से भेजे गए पत्रों में कई बार यह उल्लेख मिलता है कि अहिल्याबाई ने पेशवा को सैन्य मामलों पर बार-बार सुझाव दिए। अहिल्याबाई कुशल रणनीतिकार थीं और समय रहते मराठा राज्य पर आक्रमणकारी चालबाजियों और हमलावरों के दुष्ट स्वभाव को भलीभांति समझ लेती थीं। इसीलिए उन्होंने पेशवा को लिखा था कि श्रीमंत (पेशवा) को शिलेदारों और हुजूरात मे नए सिपाहियों की भर्ती करनी चाहिए। हर जगह अपनी फौज भेजें और उन्हें (अंग्रेजों को) आतंकित करना चाहिए। श्रीमंत सेना की उपेक्षा करते हैं यह अच्छी बात नहीं। हमेशा श्रीमंत के साथ सेना लगभग बीस-पच्चीस हजार होनी चाहिए। सरकारी सेनाओं और फ्रांसीसियों को एकजुट करके बंबई भेजा जाना चाहिए और वसई को सरकारी सेनाओं और अंग्रेजों द्वारा फिर से स्थापित (मुक्त) किया जाना चाहिए।

इसी तरह अहिल्याबाई ब्रिटिश चालबाजियों से पूरी तरह परिचित थीं। उन्होंने ब्रिटिशों की चालों को इस प्रकार वर्णित किया कि "हिंसक जानवरों को कई चालों से मार सकते हैं, लेकिन भालू को मारना कठिन है। वह तभी मरेगा जब उसे पकड़कर मार दिया जाएगा। नहीं तो अगर कोई उसकी चपेट में आ जाए तो वह उसे गुदगुदी करके मार डालेगा। अंग्रेजों से लड़ाई भी इस भालू की तरह है।"

अहिल्याबाई ने दुश्मन के शत्रु को मित्र बनाने की नीति में महारत हासिल की थी। 1792–93 के आस-पास अहिल्याबाई ने एक ब्रिटिश शैली की सैन्य टुकड़ी बनाई थी, जिसमें उन्होंने एक अमेरिकी जनरल बॉयड को नियुक्त किया था। यह बात सिद्ध करती है की अहिल्याबाई एक तरफ लोक कार्यों तो दूसरी तरफ सैन्य व्यवस्थाओं में बेहतर समन्वय स्थापित कर रही थीं।

अहिल्याबाई ने जाति, वर्ण, धर्म आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया, उन्होंने ब्राह्मण, मराठा, बहुजन, आदिवासी, मुसलमानों सहित सभी के कल्याण हेतु समान रूप से कार्य किया। यहां तक कि दूसरे राज्यों के मुसलमान, जैसे निजाम भी उनकी राज्य में शरण मांगते थे। महेश्वर दरबार के इतिवृत्त में उल्लेख मिलता है कि टीपू सुलतान के राज्य का एक ब्राह्मण महेश्वर में शरण लेने आया था। यह उद्धरण यह दर्शाता है कि अहिल्याबाई के शासनकाल में अन्य राज्यों की प्रजा भी उनकी तरफ आशा की दृष्टि से देखती थी। उन्होंने 13 विभिन्न रियासतों में अपने राज्याधिकारी नियुक्त किए थे और उन रियासतों ने भी उनके दरबार में अपने राज्याधिकारी भेजे थे। उपरोक्त विवरण अहिल्याबाई के द्विपक्षीय संबंधों की सफलता की कहानी स्वयं कहते हैं। यह स्पष्ट करता है कि अहिल्याबाई का शासन न केवल धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक था, बल्कि यह एक ऐसा मॉडल भी था, जो समावेशिता और समानता के सिद्धांतों को मानता था। उनके शासन ने न केवल लोगों को शांति और सुरक्षा प्रदान की, बल्कि उनके कल्याण के लिए एक स्थायी आधार भी तैयार किया। इस तरह से विदेशी आक्रमण की कोई आशंका नहीं थी। उनके राज्य में जानकार व्यक्तियों और कलाकारों का सम्मान किया जाता था। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे ने अहिल्याबाई के कार्यों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया है। वे कहते हैं, "जनता की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र और आश्रय की व्यवस्था करना शासक की जिम्मेदारी है।"

इसी क्रम में प्रसिद्ध इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने अहिल्याबाई के बारे में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। वे कहते हैं कि मूल दस्तावेजीय साक्ष्यों के साथ साबित किया जा सकता है कि अहिल्याबाई एक उच्च श्रेणी की कूटनीतिज्ञ थीं। उनकी लोकसेवा और दानशीलता संकीर्ण धार्मिकता नहीं थे अपितु मूल्यों की स्थापना के स्थायी केंद्र थे।

इंदौर राज्य की आय को 'दौलत' (खजाना) और 'खजगी' (निजी) नामक दो भागों में बांटा गया था। इंदौर एकमात्र राज्य था, जिसमें ऐसा प्रावधान था। अहिल्याबाई की सास, गौतमाबाई को महेश्वर और चंदवाड़ के उप-विभागों का उपहार दिया गया था। उन्होंने उनके संचालन का प्रबंधन स्वतंत्र रूप से किया। वहां की आय को स्त्री धन माना जाता था और इसे निजी संपत्ति में स्थानांतरित किया जाता था। गौतमाबाई के निधन के बाद, निजी संपत्ति के वित्तीय अधिकार अहिल्याबाई को मिल गए। अहिल्याबाई ने अपने स्त्री धन से भारत भर में मंदिरों, आश्रयों, सड़कों, कुओं और खाद्य वितरण केंद्रों जैसे जन कल्याण कार्यों को वित्त पोषित किया। यह एक अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक घटना थी। इसके अलावा, उनकी दैनिक आवश्यकताएं भी निजी संपत्ति से वित्त पोषित की जाती थीं। अहिल्याबाई दृढ़ता से मानती थीं कि वह जन कल्याण के लिए पैदा हुई थीं और प्रजाजनों के हितों की रक्षा करना उनका सर्वोच्च कर्तव्य था। उनके दरबार में न्याय विभाग कमाई के अधीन नहीं था। लोगों को मुफ्त में न्याय प्रदान किया जाता था। लोग अहिल्याबाई की न्यायशीलता के प्रति सुनिश्चित थे।

अहिल्याबाई ने मानवता और कल्याण के मंत्र पर अपने शासन का संचालन किया। इसलिए अहिल्याबाई को 'पुण्यश्लोक' की उपाधि मिली। उनके द्वारा भारत के विभिन्न भागों में लागू की गईं कल्याणकारी परियोजनाओं की संरचनाएं 250 वर्षों के बाद आज भी खड़ी हैं।

गांधीजी के शिष्य विनोबा भावे ने कहा है कि मोरोपंत और अनंतफंडी जैसे कवियों द्वारा अहिल्याबाई का जो वर्णन किया गया है, वह अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। वह वास्तविकता है। उनके द्वारा किया गया यह कार्य न केवल देश को एकजुट करता है, बल्कि हमारी महान परंपरा की वैश्विक सोच को भी उजागर करता है। तत्कालीन परिस्थिति में अयोध्या, वाराणसी आदि स्थान उस समय मुस्लिम शासन के अधीन थे। उन्होंने उन राज्यों के शासकों से मंदिरों के निर्माण या पुनर्निर्माण की अनुमति कैसे प्राप्त की होगी? इससे स्पष्ट होता है कि अहिल्याबाई ने अपने व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण से कल्याणकारी कार्यों को प्रेरित किया। उन्हें अन्य राज्यों, विशेषकर मुस्लिम शासित राज्यों में मंदिरों और अन्य संरचनाओं के निर्माण की अनुमति उनकी मजबूत विदेश नीति के कारण मिली, जो समन्वय और सहयोग पर जोर देती थी। हैदराबाद के निज़ाम हो या टीपू सुल्तान, सभी ने अहिल्याबाई के प्रति सम्मान और स्नेह प्रकट किया। अहिल्याबाई की विदेश नीति उम्दा थी। अहिल्याबाई ने मानवता और कल्याण के मंत्र पर अपने शासन का संचालन किया। इसलिए, अहिल्याबाई को 'पुण्यश्लोक' की उपाधि मिली। उनके द्वारा भारत के विभिन्न भागों में लागू की गई कल्याणकारी परियोजनाओं की संरचनाएं 250 वर्षों के बाद आज भी खड़ी हैं और राष्ट्रीयता के विचार के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं। ■

सामाजिक योद्धा थीं लोकमाता अहिल्याबाई

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

राजमाता अहिल्याबाई होलकर जैसा व्यक्तित्व यदि उस कालखंड में उभरकर सामने नहीं आता तो भारत के करोड़ों लोग इस्लामीकरण और ईसाईकरण का ग्रास बन जाते। आक्रांताओं की इस साजिश को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने पूरे राज्य के गांव, कस्बों और नगरों में ढिंढोरा पिटवा दिया कि यदि कोई हिन्दुओं से उनका धर्म छीनेगा, तो उसे कठोर दण्ड मिलेगा। अहिल्याबाई के इस आदेश के कारण ईसाई और मुस्लिम इतिहासकारों ने उनके जीवन को विवादित बताने की चेष्टा की है।

अहिल्याबाई होलकर एक सामाजिक योद्धा थीं। उन्होंने ऐसे समय में राज किया जब मुगल शासकों की क्रूरता चरम पर थी। इसलिए लोकमाता ने सबसे पहले हिन्दू समाज में समरसता की भावना बढ़ाने और विभेद मिटाने के लिए अपने आचरण से अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने क्रूरता के स्थान पर ममत्व पर बल दिया। न्याय की स्थापना करते हुए राष्ट्रीयता के मर्म को जन-जन में लोकप्रिय बनाया। वह एक मात्र महारानी थीं जिन्होंने अपने जीवन काल में अनेक बार सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। अहिल्याबाई के जीवन की अनगिनत उपलब्धियां हैं। इस क्रम में उन्होंने राजधानी महेश्वर के किले को भव्य रूप दिया। इन्दौर जैसे महानगर को आकर्षक बनाने की योजना स्वयं गढ़ी और काशी विश्वनाथ मंदिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण भी कराया था। इतना ही नहीं अपने राज्य की सीमा में मुगलों द्वारा विध्वंस किए गए अनेक मंदिरों के वास्तविक स्वरूप को नवनिर्माण से लौटाया।

इस तरह अहिल्याबाई ने जीवन की अन्तिम सांस तक एक तपश्चर्या के रूप में शासन तन्त्र को सुदृढ़ बनाकर सनातन संस्कृति की रक्षा करते हुए एकत्व भाव की स्थापना की। इसलिए उनके जीवनकाल में समाज उन्हें देवी के रूप में आदर देने लगा था। उनकी शासन व्यवस्था में नैतिकता, न्याय और धर्म का बड़ा महत्व रहा। उनके शासन काल में सनातन हिन्दू संस्कृति के सद्ग्रन्थों के पठन-पाठन की व्यवस्था की गयी थी। संस्कृत भाषा के ग्रंथों को उपलब्ध कराने के लिए भी प्रबंध किए।

राजमाता अहिल्याबाई होलकर जैसा व्यक्तित्व यदि उस कालखंड में उभरकर सामने नहीं आता तो भारत के करोड़ों लोग इस्लामीकरण और ईसाईकरण का ग्रास बन जाते। अहिल्याबाई एक भक्त के रूप में आदि शंकराचार्य और वैष्णव संत रामानुजाचार्य की परम्परा के स्वामी रामानन्द की अनुयायी थीं। उन्होंने देखा कि मुगलों की अंतिम अवस्था में बड़े पैमाने पर सूफियों की टोलियां हिन्दुओं का मतान्तरण कराने के लिए निकल पड़ी हैं। दूसरी ओर ईसाई मिशनरियां हुमायूं के समय से ही मतान्तरण के लिए अनुमति पा चुकी हैं। ऐसे में अभाव, अन्याय और बीमारियों से ग्रस्त हिन्दू समाज को साजिश के तहत मतान्तरित कराने वाली टोलियां अपने जाल में फंसा लेती थीं। इसको ध्यान में रखते हुए लोकमाता ने अपने पूरे राज्य के गांव, कस्बों और नगरों में ढिंढोरा पिटवा दिया कि यदि कोई हिन्दुओं से उनका धर्म छीनेगा, तो उसे कठोर दंड मिलेगा। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के इस आदेश के कारण ईसाई और मुस्लिम इतिहासकारों ने अहिल्याबाई के जीवन को विवादित बताने की चेष्टा की है। इस इतिहास को छिपाया गया कि अहिल्याबाई ने किस प्रकार हिन्दू समाज के निर्बल वर्ग को कुटिल आक्रान्ताओं के चंगुल से बचाया। इसी क्रम में समाज को जागृत करने के लिए अहिल्याबाई जब किसी तीर्थ स्थल पर जाती तो वहां श्रद्धालुओं से धर्म की रक्षा का संकल्प करातीं। उनकी इस सक्रियता और राष्ट्र रक्षा के संकल्प से उस समय के समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। अहिल्याबाई के इन प्रयासों से हिन्दू धर्म की रक्षा में बड़ी सहायता मिली। उनके कालखण्ड के अनेक राजा अहिल्याबाई से प्रेरित हुए उन्होंने भी इस्लामी लुटेरों द्वारा तोड़े गए मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया। यही नहीं अहिल्याबाई होलकर 6 महीने के लिए पूरे भारत की यात्रा पर निकलती थीं। इसी त्याग और हिन्दुत्व की प्रेरणा के चलते इंदौर में प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी के दिन अहिल्या उत्सव होता है। ■

लोकमाता अहिल्याबाई

सनातन राज-व्यवस्था की संरक्षिका

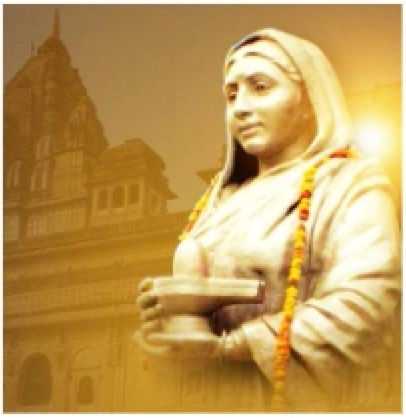

प्रणय कुमार
शिक्षाविद् एवं वरिष्ठ स्तंभकार

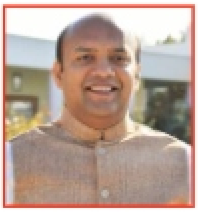

यह भारत-भू वीर प्रसूता है। यहां हर युग, हर काल में ऐसे-ऐसे वीर-वीरांगनाओं ने जन्म लिया, जिनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के आगे सारा संसार सिर झुकाता है। इन वीर-वीरांगनाओं में से किसी ने युद्ध के मैदान में अपनी तेजस्विता की चमक बिखेरी तो किसी ने मानव-मात्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। ऐसी ही एक तेजस्विनी-महिमामयी नारी थीं - लोकमाता अहिल्याबाई होलकर। उन्होंने भारतीय संस्कृति के कीर्ति-ध्वज को दसों-दिशाओं में फहराने के साथ ही हिन्दू परंपराओं एवं मान्यताओं के अनुकूल आदर्श शासन एवं राज-व्यवस्था की स्थापना की। उनका जीवन और शासन लोक-कल्याण को समर्पित था। समाज, राष्ट्र और धर्म का कीर्ति-ध्वज फहराए रखने के लिए उन्होंने खड्ग धारण करने के साथ ही अनेकानेक अभिनव, असाधारण एवं ऐतिहासिक पहल व प्रयत्न भी किए।

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर में सनातन जीवन-दृष्टि, प्रजा वत्सलता एवं कर्त्तव्यपरायणता कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए वह तत्कालीन निराशावादी परिस्थितियों को परास्त कर संपूर्ण हिन्दू समाज के गौरव और सनातन संस्कृति की पुनरुद्धारक सिद्ध हुईं। अखिल भारतीय दृष्टि से अनुप्राणित लोकमाता द्वारा लोकमंगल की भावना से संचालित निस्वार्थ सेवा भाव से दिए गए योगदान सदियों तक अविस्मरणीय एवं प्रेरणास्रोत रहेंगे।

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चौंडी नामक गांव में हुआ था। वर्तमान में यह अहमदनगर जिले के जामखेड में है। उनका जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। अहिल्या में बचपन से ही धार्मिक एवं राष्ट्रीय संस्कारों का भाव था। कहते हैं कि पुणे जाते समय मालवा राज्य के पेशवा मल्हारराव होलकर की दृष्टि 8 वर्षीय अहिल्याबाई पर पड़ी। उतनी छोटी अवस्था में भी वह गरीबों और भूखों की मदद कर रही थीं। उनकी निष्ठा एवं परोपकारिता से प्रभावित होकर मल्हारराव ने उनके पिता मानकोजी से उनका हाथ अपने बेटे खांडेराव के लिए मांगा। बाद में परिपक्वता की अवस्था में उनका विवाह इंदौर राज्य के संस्थापक एवं पेशवा मल्हारराव होलकर के पुत्र खांडेराव के साथ धूमधाम से संपन्न हुआ। महारानी अहिल्याबाई ने एक पुत्र एवं एक कन्या को जन्म दिया। पुत्र का नाम मालेराव और कन्या का नाम मुक्ताराव रखा गया। कहा जाता है कि खांडेराव में भी जिम्मेदारी और बोध का स्फुरण-जागरण महारानी अहिल्याबाई की प्रेरणा से ही हुआ। वे उन्हें राज-काज एवं शासन-व्यवस्था में सहयोग प्रदान करती थीं। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने पति के स्वाभिमान एवं गौरव-बोध को जागृत किया। मल्हारराव होलकर अपनी पुत्रवधू अहिल्याबाई को भी राज-काज की शिक्षा देते रहते थे। अपनी पुत्रवधू की बुद्धि, कार्य-कुशलता, नीतिनिपुणता से वे बहुत प्रसन्न थे। परंतु दुर्भाग्य से 1754 ई. में खांडेराव का निधन हो गया। 1766 ई. में मल्हारराव भी इस संसार को छोड़कर देवलोक गमन कर गए। श्वसुर के देहावसान के पश्चात् अहिल्याबाई के नेतृत्व में उनके बेटे मालेराव होलकर ने शासन की बागडोर संभाली। पर उस समय अहिल्याबाई और मालवा पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा, जब 5 अप्रैल 1767 को शासन की बागडोर संभालने के कुछ ही महीनों बाद उनके जवान बेटे की मृत्यु हो गई। कोई भी स्त्री जिससे थोड़े-थोड़े अंतराल पर उसके पति, श्वसुर, पुत्र का साथ छूट जाए, उसके दुःख एवं मनःस्थिति की सहज ही कल्पना की जा सकती है! परंतु अहिल्याबाई ने नियति एवं परिस्थिति के आगे घुटने नहीं टेके। उन्होंने मालवा राज्य की प्रजा को अपनी संतान मानते हुए 11 दिसंबर 1767 ई. को शासन की बागडोर अपने हाथों में ली और थोड़े ही दिनों में परिस्थितियों का लाभ उठाने के उद्देश्य से मालवा पर कुदृष्टि रखने वाले लोगों को मुंह की खानी पड़ी। अपने राज्य एवं प्रजा की रक्षा के लिए उन्होंने

न केवल अस्त्र-शस्त्र उठाया, बल्कि अनेक युद्ध-मोर्चों पर स्वयं आगे आकर अपनी सेना का कुशल नेतृत्व भी किया। इतना ही नहीं, जब आवश्यकता पड़ी उन्होंने कूटनीति से भी काम लिया। राज्य हड़पने के उद्देश्य से जब राघोवा पेशवा ने मालवा पर आक्रमण के लिए अपनी सेना भेजी तो लोकमाता अहिल्याबाई के केवल एक पत्र से यह युद्ध टल गया और पेशवा ने उन्हें उनके राज्य की सुरक्षा का वचन दिया। उस पत्र ने पेशवा राघोवा की सुप्त चेतना को जागृत किया। उस पत्र के एक-एक शब्द ने उन पर नुकीले तीर-सा असर किया और उन्होंने युद्ध का इरादा बदल दिया। अहिल्याबाई इतनी कुशल एवं दूरदर्शी थीं कि व्यापारी बनकर आए अंग्रेजों और ईस्ट इंडिया कंपनी की फूट डालो और शासन करो की नीति को उन्होंने सबसे पहले भांप लिया था। उन्होंने तत्कालीन पेशवा प्रमुख को इस संदर्भ में पत्र लिखकर उन्हें सतर्क भी किया था। इस क्रम में उन्होंने अपने विश्वसनीय सेनानी सूबेदार तुकोजीराव होलकर (मल्हारराव के दत्तक पुत्र) को सेना-प्रमुख बनाया था। वे उन पर भरोसा करती थीं और तुकोजीराव भी उनके प्रति अखंड निष्ठा एवं श्रद्धा रखते थे।

लोकमाता अहिल्याबाई का शासन-काल भले ही अल्प रहा, पर उन्होंने भावी भारत पर बहुत गहरा एवं व्यापक प्रभाव छोड़ा। अपने शासन-काल में उन्होंने राज्य की सीमाओं के भीतर ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत वर्ष के प्रमुख तीर्थों और धर्म स्थानों पर उन्होंने मंदिर बनवाए, पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। कुओं, तालाबों, बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, सड़कों की मरम्मत करवाई, भूखों के लिए अन्न क्षेत्र खुलवाए, प्यासों के लिए स्थान-स्थान पर प्याऊ लगवाए। तीर्थ स्थलों पर धर्मशालाओं का निर्माण कराने के साथ ही शास्त्रों के अध्ययन-चिंतन हेतु मंदिरों में विद्वान आचार्यों की नियुक्ति की।

आत्म-प्रतिष्ठा एवं प्रवंचना का मोह त्यागकर उन्होंने सदैव न्याय करने का प्रयत्न किया। कहते हैं कि वे इतनी न्यायप्रिय थीं कि एक बार अपने इकलौते एवं दत्तक पुत्र तक को मृत्युदंड देने को उद्धत हो गई थीं। प्रजाजनों की विनती के बावजूद वह न्याय से टस से मस नहीं हुईं। उनके पुत्र के रथ से कुचलकर एक नवजात बछड़ा घायल हो गया और वहीं उसकी मौत हो गई। मृत बछड़े के पास उसकी माँ यानी गाय आकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद अहिल्याबाई वहां से गुजरीं। संवेदनशील एवं न्यायप्रिय रानी से गौमाता का शोक कैसे छिप पाता! सारा घटनाक्रम जानने के बाद अहिल्याबाई ने दरबार में मालेजी की पत्नी मेनाबाई से पूछा -"यदि कोई व्यक्ति किसी माँ के सामने उसके बेटे की हत्या कर दे, तो उसे क्या दंड मिलना चाहिए?" मेनाबाई ने उत्तर दिया- "उसे प्राण दंड मिलना चाहिए।" इसके बाद महारानी अहिल्याबाई ने मालेराव को हाथ-पैर बांधकर सड़क पर डालने को कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें रथ से कुचलकर मृत्युदंड दिया जाय। इस कार्य के लिए जब कोई सारथी आगे नहीं आया तो वह स्वयं इस कार्य के लिए रथ पर सवार हो गईं। पर विधाता को यह स्वीकार नहीं था। कहते हैं कि जब वे रथ को लेकर मालेराव की ओर आगे बढ़ीं तो वही गाय रथ के सम्मुख आकर खड़ी हो गई। यह दृश्य देखकर मंत्री एवं प्रजाजनों ने उनसे गुहार लगाई कि शायद यह बेजुबान गाय भी नहीं चाहती कि किसी और माँ के बेटे के साथ ऐसा हो। वह माले जी के लिए आपसे दया की भीख मांग रही है। कहा यह भी जाता है कि स्वयं एकलिंग भगवान शिव गाय का रूप धारण कर न्याय के प्रति उनकी निष्ठा की परीक्षा ले रहे थे। जिसमें वे सौ प्रतिशत खरी उतरीं।

तत्कालीन समय में शासन और व्यवस्था के नाम पर जब देश में विधर्मियों और विदेशियों के अनाचार-अत्याचार का बोलबाला था। प्रजाजन साधारण गृहस्थ, किसान-मजदूर-व्यापारी अत्यंत दीन-हीन अवस्था में जीने को अभिशप्त थे। ऐसे घोर अंधेरे कालखंड में लोकमाता अहिल्याबाई का शासन वहां की प्रजा के लिए प्रकाश पुंज की तरह था।

वे न्याय के संदर्भ में अपने समकालीन पुणे के न्यायाधीश श्री राम शास्त्री जी की परंपरा का अनुसरण करती थीं। उनके जीवन-काल में ही जनता ने उन्हें 'देवी' समझना और कहना प्रारंभ कर दिया था। तत्कालीन समय में शासन और व्यवस्था के नाम पर जब देश में विधर्मियों और विदेशियों के अनाचार-अत्याचार का बोलबाला था। प्रजाजन-साधारण गृहस्थ, किसान-मजदूर-व्यापारी अत्यंत दीन-हीन अवस्था में जीने को अभिशप्त थे। ऐसे घोर अंधेरे कालखंड में लोकमाता अहिल्याबाई का शासन वहां की प्रजा के लिए प्रकाश पुंज की तरह था। इस तरह शासन करते हुऐ 13 अगस्त सन 1795 को उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। पर उससे पूर्व उन्होंने जो-जो काम किया वह इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। चाहे महेश्वर को राजधानी बनाने का अभिनव प्रयोग हो या संपूर्ण हिन्दू समाज के गौरव और सनातन संस्कृति के केंद्र काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण व जीर्णोद्धार या लोक-मंगल की भावना से संचालित अन्यान्य निःस्वार्थ सेवा-कार्य - उन सबके पीछे महारानी अहिल्याबाई की सनातन जीवन-दृष्टि, प्रजावत्सलता एवं कर्त्तव्य परायणता थी। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लोकमाता अहिल्याबाई ने न केवल अपने समय एवं समाज पर गहरा व व्यापक प्रभाव डाला, बल्कि सनातन संस्कृति एवं सरोकारों को जीने, समझने और अक्षुण्ण रखने के कारण उनका योगदान सदियों तक अमर एवं अविस्मरणीय रहेगा। ■

सेवा की प्रतिमूर्ति-शिव साधिका

अनुपमा अग्रवाल
वरिष्ठ लेखिका एवं समाज सेविका

सेवा की प्रतिमूर्ति और सनातन संस्कृति की रक्षक भारतीय वीरांगना अहिल्याबाई होलकर का इंदौर राज्य के संस्थापक महाराजा मल्हारराव होलकर के पुत्र खांडेराव के साथ 1737 को विवाह संपन्न हुआ। महाराजा मल्हारराव के जीवनकाल में ही उनके पुत्र खांडेराव का निधन हो गया अतः बाद में मल्हारराव की मृत्यु के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य के शासन का कार्यभार संभाला। सन 1767 से 1795 तक मालवा पर शासन करने वाली अहिल्याबाई होलकर के शासनकाल को समावेशी और सामाजिक सद्भाव के अनुकरणीय काल के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने शासनकाल में समाज के कल्याण के लिए अनेक सेवा कार्य किए, जिनमें धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में किए गए कार्य शामिल हैं। उनके द्वारा कराए गए सेवा कार्य उनकी परोपकारी भावना, धार्मिक आस्था और जनकल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

अपने चारित्रिक गुणों और सेवाकार्यों के कारण वे लोकमाता कहलाईं। उन्होंने शासक की भारतीय परम्परा को जीवंत किया कि एक शासक का कर्तव्य मात्र शासन करना ही नहीं अपितु समाज की सेवा और प्रजा की भलाई करना भी है।

धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण और विकास : अहिल्याबाई होलकर धार्मिक स्थलों के प्रति गहरी आस्था रखती थीं अतः उन्होंने देश के विभिन्न तीर्थस्थलों पर मंदिरों का निर्माण कराने के साथ-साथ अनेक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार भी कराया। उनके द्वारा कराए गए निर्माण कार्य न केवल धार्मिक सेवा के रूप में जाने जाते हैं, बल्कि समाज को एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव भी प्रदान करते हैं। वाराणसी में स्थित प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण अहिल्याबाई होलकर के प्रयासों से ही हुआ, जो आज भी उनकी सनातन धर्म में आस्था और भक्ति का प्रतीक है वहीं गुजरात में स्थित प्राचीन सोमनाथ मंदिर को भी अहिल्याबाई के सहयोग से फिर से बनाया गया। उन्होंने अपनी नवीन राजधानी महेश्वर में भी कई मंदिरों का निर्माण कराया और इसे एक प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में विकसित किया। अन्य तीर्थस्थल जैसे गया, हरिद्वार, प्रयाग, अयोध्या, उज्जैन, वृन्दावन, पुष्कर, द्वारका, जगन्नाथपुरी समेत लगभग सभी तीर्थस्थलों पर मंदिरों, धर्मशालाओं और नदी किनारे घाटों का निर्माण करवाया। इन निर्माण कार्यों से तीर्थयात्रियों को सुविधाएं मिलीं और धार्मिक स्थलों का संरक्षण भी हुआ।

धर्मशालाओं और विश्राम गृहों का निर्माण : पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अहिल्याबाई ने विभिन्न स्थानों पर धर्मशालाओं और विश्रामगृहों का निर्माण करवाया। ये स्थल न केवल श्रद्धालुओं को आवास प्रदान करते थे, बल्कि समाज के असहाय, गरीब और जरूरतमंद लोगों को सुरक्षित आश्रय भी देते थे। धर्मशालाओं में भोजन, विश्राम और अन्य आवश्यक सुविधाओं की निःशुल्क व्यवस्था भी गई थीं, जिससे हर वर्ग के लोग लाभान्वित हो सकें।

सार्वजनिक जलाशयों और कुओं का निर्माण : मालवा क्षेत्र में पानी की समस्या को ध्यान में रखते हुए अहिल्याबाई होलकर ने कई सार्वजनिक जलाशयों, तालाबों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया। इससे कृषि में तो सुधार हुआ ही साथ ही पानी की उपलब्धता से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्र को लाभ हुआ। उनके जल संरक्षण और प्रबंधन के कार्यों ने न केवल तत्कालीन समय में बल्कि आज भी कई क्षेत्रों में लोगों को जल संकट से राहत दिलाई है।

शिक्षा और समाज सुधार : अहिल्याबाई होलकर ने अपने शासनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में भी कई महत्वपूर्ण कार्य किए उन्होंने आक्रांताओं के आक्रमण से ध्वस्त हो चुके शिक्षण संस्थानों व मठों के निर्माण हेतु दिल खोलकर अनुदान दिया तथा विद्वानों के रहने और अध्यवसाय के

लिए आश्रमों व गुरुकुलों का पुनर्निर्माण कराया ताकि शिक्षा का प्रसार-प्रचार सुचारू रूप से चलता रहे व समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता रहे। उन्होंने महिलाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई कदम उठाए। राहगीरों, गरीबों, विकलांगों, साधु-संतों, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं का भी रानी अहिल्याबाई पूरा ध्यान रखती थीं यहां तक कि अपने सैनिकों व कर्मचारियों को समय पर वेतन तथा शौर्यपूर्ण कार्य करने वाले स्वामिभक्त सैनिकों को पुरस्कृत भी करती थीं।

स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाओं का प्रबंध : प्रजा की स्वास्थ्य सेवाओं की ओर भी अहिल्याबाई ने पूरा ध्यान रखा। प्रजा के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ बनाने हेतु उन्होंने नवीन चिकित्सालयों का निर्माण करवाया। उस समय चिकित्सा सेवाओं का विस्तार अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था बावजूद इसके अहिल्याबाई ने समाज के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखते हुए राज्य में वैद्यों की सुलभता और रोगियों के उपचार हेतु जरूरी आयुर्वेदिक दवाओं की उपलब्धता में भी अहम भूमिका निभाई।

अन्न वितरण और भंडारों का आयोजन : अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय अहिल्याबाई होलकर राज्य में अन्न वितरण और भंडारे का आयोजन करवाया करती थीं। उन्होंने अपने शासनकाल में सुनिश्चित किया कि उनके राज्य में कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे तथा भंडारों में सभी वर्गों के लोग समान रूप से भोजन ग्रहण करें। उन्होंने गरीबों के लिए अन्नसत्र खुलवाए जहां लोगों को प्रतिदिन भोजन मिलता था। यह कार्य उनकी समाज सेवा और मानवता के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। रानी अहिल्याबाई होलकर ने सेवा कार्यों को संचालित करने के साथ राज्य में अनेक कल्याणकारी योजनाओं को चालू किया तथा राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दिया।

सड़क और आवागमन का विकास

अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में व्यापार और आवागमन को सुगम बनाने के लिए सड़कों का तो विधिवत निर्माण कराया ही साथ ही कई पुलों का भी निर्माण करवाया, ताकि लोग आसानी से यात्रा कर सकें और व्यापार में भी वृद्धि हो सके। इन सड़कों और पुलों ने न केवल उनके राज्य में बल्कि आस-पास के क्षेत्रों में भी आवागमन को सरल बना दिया।

नारी उत्थान के कार्य : अहिल्याबाई ने समाज में नारियों के प्रति सहानुभूति और समानता का संदेश दिया। वे विधवाओं के पुनर्विवाह की समर्थक और नारी शिक्षा को बढ़ावा देने वाली थीं। उन्होंने समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए, उस वक्त के बनाये गए इस कानून में बदलाव किया कि अगर कोई महिला विधवा हो जाए और उसके कोई पुत्र न हो तो उसकी पूरी संपत्ति सरकारी खजाने या फिर राजकोष में जमा कर दी जाती थी लेकिन अहिल्याबाई ने इस कानून में परिवर्तन कर विधवा महिलाओं को अपने पति की संपत्ति का उत्तराधिकारी बनाया साथ ही उन्होंने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए भी भरसक प्रयास किए, जिससे महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने नारी शक्ति का महत्व समझते हुए महिलाओं की एक सेना तैयार कर उन्हें हथियार चलाने, रण में चक्रव्यूह रचने का विधिवत प्रशिक्षण दिया।

समाज के प्रत्येक वर्ग का ध्यान रखते हुए अपने जनकल्याण कार्यों से एक आदर्श शासक का उदाहरण प्रस्तुत करने वाली माता अहिल्याबाई द्वारा कराए गए निर्माण कार्य, समाज सुधार, धार्मिक स्थलों के विकास और जनसेवा के प्रयास भारतीय इतिहास में उनकी सेवा भावना को अमर बनाते हैं।

कृषि सुधार और आर्थिक प्रगति के प्रयास : अहिल्याबाई ने कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कई योजनाएं बनाई। उनके शासनकाल में किसानों की सहायता के लिए सिंचाई योजनाएं बनाई गईं और उन पर करों में छूट दी साथ ही किसानों का लगान कम किया। उन्होंने राज्य की अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाए रखने के लिए व्यावसायिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन दिया, जिससे लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठा।

अहिल्याबाई होलकर ने अपने शासनकाल के दौरान कभी भी सेवा, सौम्यता, सरलता और सादगी जैसी अपनी विशेषताओं का परित्याग नहीं किया बल्कि उन्होंने अपने समय में जो सेवा कार्य किए, वे आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय हैं। उन्होंने उस दौर में सत्ता संभाली थी जब किसी महिला के लिए शासन चलाने का सोच पाना भी मुश्किल था। उन्होंने समाज के हर वर्ग का ध्यान रखते हुए अपने जनकल्याण कार्यों से एक आदर्श शासक का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके द्वारा कराए गए निर्माण कार्य, समाज सुधार, धार्मिक स्थलों का विकास और जनसेवा के प्रयास भारतीय इतिहास में उनकी सेवा भावना को अमर बनाते हैं। अपने चारित्रिक गुणों और सेवाकार्यों के कारण वे लोकमाता कहलाईं। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने यह सिखाया कि एक शासक का कर्तव्य केवल शासन करना नहीं है, बल्कि समाज की सेवा और लोगों की भलाई करना भी है। उन्होंने विदेशी आक्रान्ताओं के कारण ढह रही भारतीय सनातन संस्कृति और सभ्यता को फिर से बचाने और सहेजने का सफल प्रयास किया। उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर आज भी लोग सेवा और परोपकार का पथ अपनाते हैं। ■

एक साधारण कन्या की राजश्री से राजऋषि तक की यात्रा

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज सिम्भावली (हापुड़)

सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय, मानवता प्रेमी, कुशल प्रशासक, सादगी व पवित्रता की प्रतिमूर्ति, दूरदर्शी भारतीय महिला शासिका, पुण्यश्लोक, शिवसाधिका, लोकमाता अहिल्याबाई का नाम भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उनका जीवन लाखों करोड़ों भारतीय नारियों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणा पुंज के रूप में दीप्तिमान है।

रत्नगर्भा भारतीय भूमि से अनेक रत्न व पुण्य आत्माएं अवतरित हुई हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से अपने मानव जीवन को महान बना लिया। ऐसी ही सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय, मानवता प्रेमी, कुशल प्रशासक, सादगी व पवित्रता की प्रतिमूर्ति, दूरदर्शी भारतीय महिला शासिका, पुण्यश्लोक, शिवसाधिका, लोकमाता अहिल्याबाई का नाम भारतीय इतिहास के पन्नो में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उनका जीवन लाखों करोड़ों भारतीय नारियों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणा पुंज के रूप में दीप्तिमान है। इसलिए वह एक महान समाज सुधारक और धर्मनिष्ठा की प्रतीक के रूप में अमर हैं। उनकी जीवन यात्रा एक साधारण कन्या से लेकर राज्य के सिंहासन से होती हुई एक तपस्वी यानी राजश्री से लेकर राजऋषि तक की यात्रा का प्रतीक है। जिसमें उन्होंने राज्य संचालन की कुशलता, धार्मिकता और समाज सेवा के बीच संतुलन बनाए रखा।

अहिल्याबाई होलकर मराठा साम्राज्य की प्रसिद्ध महारानी तथा इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खांडेराव की धर्मपत्नी थीं। वह परिहार गोत्र की थीं। उन्होंने महेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया। अहिल्याबाई सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय के मूलमंत्र के साथ महेश्वर की गद्दी पर बैठीं। एक महिला के लिए वह समय काफी चुनौतीपूर्ण था, लेकिन अहिल्याबाई ने एक बहु, माँ व राजमाता के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। उनकी इस यात्रा के बारे में प्रस्तुत पंक्तियां न्यायोचित ही हैं कि-

कुछ बनने के लिए खुद को पड़ता है तपाना।
आसान नहीं है किसी का राजऋषि बन जाना।।

लोकमाता अहिल्याबाई ने न केवल राज्य की सीमाओं को सुरक्षित रखा, बल्कि अपने राजकार्य के दौरान कई सामाजिक और धार्मिक सुधारों की ओर भी ध्यान दिया। अहिल्याबाई होलकर के धार्मिक और सामाजिक कार्यों ने उन्हें 'राजऋषि' का दर्जा

दिलाया। वे अन्न, जल, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार की दिशा में कार्यरत रहीं। वे एक न्यायप्रिय शासिका थीं और उनकी नीतियों ने राज्य में सुख-शांति का वातावरण तैयार किया। अतः सत्य ही हैं कि –

अहिल्या धर्मपत्नी शीलवृद्धा महाबला।
राजऋषिवत्सला धर्मध्वजा यशस्विनी॥
वीर्यवती च पौराणि रक्षणे स्थिता सदा।
लोककल्याणकारिणी प्रजाश्रयणकर्त्री च॥

धर्मपरायणता व लोककल्याणकारी कार्यों के कारण ही राजऋषि व समाज सुधारक के रूप में समूचे विश्व में उनके जैसा कोई नहीं है। अहिल्याबाई की दृष्टि समाज के सभी वर्गों के उत्थान की ओर थी। उन्होंने दलितों, महिलाओं और निर्धन वर्ग के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की। उन्होंने हर जाति और धर्म के लोगों के बीच सामंजस्य स्थापित किया और हमेशा यह प्रयास किया कि उनके राज्य में कोई भी भूखा न सोए। उनके द्वारा किए गए मंदिर निर्माण और धर्म यात्रा उनकी धार्मिक निष्ठा का दिग्दर्शन है। वहीं उनके सामाजिक अनुदान एक समाज सुधारक के रूप में हस्ताक्षर हैं।

अहिल्याबाई होलकर की यात्रा वास्तव में एक प्रेरणा है, जो यह दर्शाती है कि एक महिला अपने उच्च नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ शासन कर सकती है। उनके कार्यों ने उन्हें केवल एक सक्षम शासिका नहीं, बल्कि एक धार्मिक, समाजसेवी और राष्ट्र निर्माता के रूप में भी स्थापित किया। जिसमें उन्होंने न केवल राज्य की प्रगति सुनिश्चित की, बल्कि समाज में न्याय और समानता की भावना भी प्रकट की। उनके योगदान और शासकीय दृष्टिकोण ने यह सिद्ध कर दिया कि राजशक्ति और धर्म, दोनों का संयोजन समाज के कल्याण के लिए आवश्यक है। उनकी यह यात्रा आज भी हमें प्रेरित करती है कि हम अपने कार्यों में न केवल सफलता की ओर बढ़ें, बल्कि समाज की सेवा भी करें।

शिवास्मिता धर्मपत्नी, न्यायविद्या समन्विता।
राज्यवृद्धेः साक्षात्कारी, अहिल्या बाई महाशिवा॥
धर्मेण समर्पिता राज्ये, धर्माधिष्ठिता शक्तिमान्।
मुक्तिसंयोगिनी यत्र, यत्र तत्र महादयिता॥

लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन एक संत व साध्वी की भांति जनता की भलाई के लिए समर्पित था। उनके जीवन से कुछ जीवंत उदाहरण हमें आज भी सत्यमयी, पवित्रमयी, सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा देते है...एक समय बुन्देलखंड के चन्देरी से एक अच्छा 'धोती-जोड़ा' आया था, जो उस समय बहुत प्रसिद्ध हुआ करता था। अहिल्याबाई ने उसे स्वीकार किया। उस समय एक सेविका जो वहां उपस्थित थी वह धोती-जोड़े को बड़ी लालसा से देख रही थी। अहिल्याबाई ने जब यह देखा तो उस कीमती जोड़े को उस सेविका को दे दिया। इसी प्रकार एक बार उनके दामाद ने पूजा-अर्चना के लिए कुछ बहुमूल्य सामग्री भेजी थी। उस सामान को एक कमजोर भिखारिन जिसका नाम था सिन्दूरी, उसे दे दिया था। किसी सेविका ने याद दिलाया कि इस सामान की जरूरत आपको भी है परन्तु उन्होंने यह कहकर सेविका की बात को नकार दिया कि उनके पास और है।

रोने वाली स्त्रियों को वे उनके आंसुओं को रोकने के लिए कहतीं, आंसुओं को संभालकर रखने का उपदेश देतीं और उचित समय पर उनके उपयोग की बात कहतीं। उस समय किसी पुरुष की मौजूदगी को वे अच्छा नहीं समझती थीं। यदि कोई पुरुष किसी कारण मौजूद भी होता तो वे उसे किसी बहाने वहां से हट जाने को कह देतीं। इस प्रकार एक महिला की व्यथा, उसकी भावना को एकांत में सुनती, समझती थीं। यदि कोई कठिनाई या कोई समस्या होती तो उसे हल कर देतीं अथवा उसकी व्यवस्था करवातीं। महिलाओं को एकांत में अपनी बात खुलकर कहने का अधिकार था। राज्य के दूरदराज के क्षेत्रों का दौरा करना, वहां प्रजा की बातें, उनकी समस्याएं सुनना, उनका हल तलाश करना उन्हें बहुत भाता था। अहिल्याबाई, जो अपने लिए पसन्द करती थीं, वही दूसरों के लिए। विशेषतौर पर महिलाओं को त्यागमय उपदेश भी दिया करती थीं।

अहिल्याबाई होलकर के योगदान और उनके शासकीय दृष्टिकोण ने यह सिद्ध कर दिया कि राजशक्ति और धर्म, दोनों का संयोजन समाज के कल्याण के लिए आवश्यक है। उनकी यह यात्रा आज भी हमें प्रेरित करती है कि हम अपने कार्यों में न केवल सफलता की ओर बढ़ें, बल्कि समाज की सेवा भी करें।

एक बार होलकर राज्य की दो विधवाएं अहिल्याबाई के पास आईं, दोनों बड़ी धनवान थीं, परन्तु दोनों के पास कोई सन्तान नहीं थी। वे अहिल्याबाई से प्रभावित थीं। अपनी अपार संपत्ति अहिल्याबाई के चरणों में अर्पित करना चाहती थीं। संपत्ति न्योछावर करने की आज्ञा मांगी, परन्तु उन्होंने उन दोनों को यह कहकर मना कर दिया कि जैसे मैंने अपनी संपत्ति जनकल्याण में लगाई है, उसी प्रकार तुम भी अपनी संपत्ति को जनहित में लगाओ। उन विधवाओं ने ऐसा ही किया और वे धन्य हो गईं। इस तरह वास्तव में लोकमाता अहिल्याबाई की राजश्री से राजऋषि तक की यात्रा बहुत प्रेरणादायक है। आज भी आम जनमानस उन्हें देवी की तरह पूजता है। कवि मोरोपंत के शब्दों में, "देवी अहिल्याबाई का निष्ठावान और कर्तव्य परायण चरित्र महाराष्ट्र ही नहीं, अपितु पूरे देश में लोकप्रिय है वह गंगा नदी के समान पवित्र हैं। सदा सद्भावना-युक्त कार्य कर सभी का कल्याण करती हैं। इन्हीं सद्गुणों के कारण वह जन-जन के हृदय में स्थान बनाए हुए हैं। ■

सामाजिक समरसता की प्रेरणा पुंज

मोनिका चौहान
स्वतंत्र टिप्पणीकार

अहिल्याबाई एक धर्मनिष्ठ नारी थीं। उन्होंने शास्त्रों का गहन अध्ययन कर समाज को धर्म के नाम पर पाखण्ड करने से मना किया। सनातन धर्म जीव-जीव में, यहां तक कि निर्जीव कही जाने वाली वस्तुओं में भी ईश्वरतत्व स्वीकारता है। सनातन जीवन पद्धति में छुआछूत और आडम्बरों का कोई स्थान नहीं है।

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर भारतीय इतिहास में अपने न्याय, दया और समरसता के आदर्शों के लिए प्रसिद्ध हैं। वह 18वीं शताब्दी में मालवा क्षेत्र की एक प्रमुख शासिका थीं और उन्होंने अपनी प्रजा के साथ समानता का व्यवहार कर एक आदर्श राज्य का निर्माण किया। उनके शासनकाल में न केवल प्रशासनिक दक्षता बल्कि सामाजिक न्याय प्रबल था। माता अहिल्याबाई जाति, धर्म और वर्ग से ऊपर उठकर सभी लोगों के हितों को प्राथमिकता देती थीं। लोकमाता अहिल्याबाई ने समाज में महिलाओं और दलितों को समान अधिकार देने का प्रयास किया। उनके द्वारा स्थापित न्याय व्यवस्था में सभी के साथ समान व्यवहार होता था चाहे कोई किसी भी जाति या धर्म का हो। उनकी नीति और शासन पद्धति ने समाज में समरसता का वातावरण बनाया जो सामाजिक समरसता के प्रति उनके कर्मठ भाव को दर्शाता है।

अहिल्याबाई होलकर का काल वह काल था जब महाराष्ट्र में पेशवा ब्राह्मणों का राज था। उस समय समाज में कुछ विकृतियां आ गयी थीं। समाज में अपने ही भाई बंधुओं के साथ अमानवीय व्यवहार होने लगा था। उस समय छुआछूत सामाजिक बुराई के रूप में हमारी सनातन परम्परा के विरुद्ध कुप्रथा थी। इस तरह समाज में भाईचारा कम हो गया था। लोग एक दूसरे का भला नहीं चाहते थे। अहिल्याबाई होलकर ने अपने शासन में ऐसी किसी भी कुप्रथा को नहीं पनपने दिया। इसके विपरीत उन्होंने दलित, आदिवासियों और पिछड़ों के उद्धार के लिए बहुत काम किया। आदिवासियों को जंगल से निकालकर गांव में बसाया। जीवनयापन करने के लिए उन्हें खेती की जमीन उपलबध कराई। सामाजिक कुप्रथाओं पर प्रहार करने का उदाहरण उन्होंने स्वयं समाज के सामने रखा। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह आदिवासी समाज के होनहार युवक यशवंत से किया। उस समय ऐसा करना शासकीय जनों के समाज में असंभव था। कुछ स्थानों पर निम्न वर्ग के लोगों को मंदिर जाने, कुएं से पानी भरने तक की अनुमति नहीं थी, अगर कोई दलित ऐसा करता था तो उसे दंडित किया जाता था। लेकिन महारानी अहिल्याबाई ने इस भेद-भाव को समाप्त कर समरसता का एक उच्च उदाहरण प्रस्तुत किया और दलितों और पिछड़े वर्ग को समाज में एक उचित और सम्मानित स्थान दिलाने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी प्रजा को स्पष्ट सन्देश दिया कि सनातन धर्म में ऐसी बुराइयों के लिए कोई स्थान नहीं है। वे स्वयं एक धर्मनिष्ठ नारी थीं। उन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया था, उन्होंने लोगों को धर्म के नाम पर पाखण्ड करने से मना किया, सनातन धर्म जीव-जीव में ईश्वर का वास मानता है, यहां तक कि निर्जीव कही

जाने वाली वस्तु में भी ईश्वर तत्व मानते हैं। तत्कालीन समाज में ऊंच-नीच की बुराई को देखकर वे व्यथित हो जाती थीं, उन्होंने सामाजिक समरसता के लिए किसी माध्यम से नहीं वरन् स्वयं आगे बढ़कर निर्णय लिए और अपने राज्य में उन्हें लागू किया।

महारानी अहिल्याबाई होलकर जब किसी कार्य हेतु अपने राज्य में भ्रमण करती थीं तो उनके राज्य की महिलाएं उनके पैर छूने का प्रयास करती थीं लेकिन वे उन्हें अपने पैर नहीं छूने देती थीं, बल्कि उन्हें समझाते हुए कहती थीं कि हम सब समान हैं। हर व्यक्ति का सम्मान एक जैसा है, समाज में न कोई ऊंचा है न कोई नीचा है, न कोई छोटा है न कोई बड़ा है इसलिए आप मेरे पैर न छुएं। वह उन महिलाओं को अपने गले लगा लेती थीं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए लघु उद्योग शुरू करवाए ताकि महिला समाज को भी मजबूती मिले। अहिल्याबाई ने महिलाओं को सिर उठाकर जीने की आजादी दी और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने महिलाओं को सैन्य प्रशिक्षण भी दिया और महिलाओं की सैनिक टुकड़ियां बनायी। महिलाओं को समान अधिकार दिलाने के लिए अहिल्याबाई ने महिलाओं का नेतृत्व कर उन्हें आगे बढ़ाया।

उनका न्यायिक समरसता का उदाहरण प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक बार अहिल्याबाई होलकर के बेटे मालेजी राव अपने रथ में सवार होकर राज्य में घूम रहे थे उसी समय गाय का बछड़ा कूदता हुआ रथ के पहिए की चपेट में आकर बुरी तरह घायल हो गया। मालेजी राव उसको देखकर न तो रुके और न ही कोई संवेदना व्यक्त की। वह बछड़ा तड़प-तड़प कर मर गया। संयोग से कुछ समय बाद अहिल्याबाई वहां से निकली तो उन्होंने देखा कि वहां एक गाय का बछड़ा मरा पड़ा हुआ है और उसके पास एक गाय चुपचाप बैठी हुई है। उन्हें यह दृश्य देखकर बहुत दुःख हुआ और वह

समाज में ऊंच-नीच की बुराई को देखकर अहिल्याबाई व्यथित हो जाती थीं। उन्होंने सामाजिक समरसता के लिए किसी माध्यम से नहीं अपितु स्वयं आगे बढ़कर निर्णय लिए, नियम बनाकर अपने राज्य में उन्हें लागू भी किया।

अपने रथ से उतरीं और गाय को सहलाने लगीं। माता अहिल्याबाई ने वहां खड़े हुए लोगों से बछड़े के मरने का कारण पूछा। पहले तो लोगों ने नहीं बताया परंतु सख्ती से पूछने पर उन्हें पूरी घटना का पता चला। जब वह महल में पहुंचीं तो उन्होंने मालेजी राव की पत्नी मैनाबाई से पूछा कि अगर किसी माँ के सामने उसके पुत्र की कोई हत्या कर दे तो हत्या करने वाले को क्या सजा देनी चाहिए। मैनाबाई ने कहा मृत्युदंड। अहिल्याबाई ने अपने बेटे को मृत्युदंड की सजा सुनाई और कहा कि इसे भी वैसे ही मृत्यु मिलेगी जैसे कि गाय के बछड़े की मृत्यु हुई। उन्होंने मालेजी को एक स्थान पर बंधवा दिया और अपने मंत्रियों से उसे रथ से कुचलने के लिए कहा। कोई भी रथ चलाने को तैयार नहीं हुआ तो अहिल्याबाई स्वयं रथ की सारथी बनीं। जैसे ही वह रथ को आगे बढ़ाने लगीं तभी वहां एक गाय रथ के सामने आ गयी। गाय को हटाने का प्रयास किया गया पर वह नहीं हटी। मंत्रियों ने माता अहिल्याबाई को समझाया कि शायद गाय भी नहीं चाहती कि किसी भी माँ के सामने उसके पुत्र की हत्या हो। इस तरह न्याय के लिए अपने पुत्र को भी मृत्युदंड देने से नहीं चूकीं वे ऐसी न्यायप्रिय थीं माता अहिल्याबाई, जिन्होनें समाज को बताया कि न्याय सभी के लिए एक जैसा होना चाहिए, चाहे कोई साधारण व्यक्ति हो या राजा का पुत्र।

अहिल्याबाई ने सुनिश्चित किया कि उनका प्रशासन सभी के लिए सुलभ होगा। वे प्रतिदिन सार्वजानिक सभाएं आयोजित करती थीं जहां कोई भी अपनी शिकायत कर सके और न्याय की मांग कर सके। इस तरह उन्होंने कमजोर और वंचित लोगों को अपनी चिंता और जरूरतों को सीधे उनके समक्ष रखने का दैनिक मंच प्रदान किया। इस खुले दरबार की नीति ने समाज में समरसता के भाव को स्थापित किया।

सामाजिक समरसता को विकसित करने में माता अहिल्याबाई ने एक अमिट छाप छोड़ी है जिससे वे एक पूजनीय व्यक्तित्व बन गयीं। उनके नेतृत्व के सिद्धांत आज की शासन प्रणाली को भी प्रेरित करते हैं। उनके न्यायपूर्ण अनुप्रयोग सशक्त और समरस समाज निर्माण हेतु आधारभूत ढांचा प्रस्तुत करते हैं। उनके दिए गए सिद्धांतों को अपनाकर, समकालीन नेता आज की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं और एक अधिक समावेशी, कल्याणकारी व्यवस्था की प्रेरणा दे सकते हैं। ■

भारतीयता की प्रखर हस्ताक्षर अहिल्याबाई होलकर

डॉ. सौरभ मालवीय
एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

शिवजी की अनन्य भक्त लोकमाता अहिल्याबाई संकल्प सृष्टा थीं। वह कल्याणकारी शासक और प्रतिभा की अतुलनीय प्रतिमूर्ति थीं। इसलिए उन्होंने दैवीय संवेदना और पवित्र वत्सलता के स्पर्श से देशभर में एकता एवं समरसता का अद्वितीय उदाहरण स्थापित किया।

अहिल्याबाई होलकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण ही आज भी देवी की भांति उनका आदर-सम्मान किया जाता है। उन्होंने अपना पूरा जीवन जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। वे मालवा राज्य की शासिका थीं, परंतु अपने उत्कृष्ट कार्यों के कारण वे देशभर में प्रसिद्ध हो गईं। वह केवल सिंहासन पर बैठकर ही निर्देश नहीं देती थीं, अपितु राज्य का निरीक्षण भी करती थीं। उन्होंने देशभर का भ्रमण किया। वह लगान प्राप्त करने से लेकर न्याय करने तक प्रायः सभी कार्य स्वयं करती थीं।

अहिल्याबाई होलकर पर एक साथ कई संकट आए। एक ओर परिजनों की मृत्यु का असीम दुख एवं दूसरी ओर राज्य की चिंता। किंतु इन विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा तथा निरंतर आगे बढ़ने का निर्णय लिया क्योंकि उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य जनकल्याण था।

वह अपनी प्रजा को संतान की भांति स्नेह करती थीं। वे वीर योद्धा एवं कुशल धनुर्धारी भी थीं। उन्होंने कई युद्धों में सेना का नेतृत्व किया। उन्होंने महिलाओं की सेना भी बनाई थी। उनके लगभग तीस वर्षों के शासनकाल में राज्य ने कला, नृत्य, संगीत, साहित्य, कृषि एवं उद्योग आदि के क्षेत्र में बहुत उन्नति की। उनके राज्य में कवियों, साहित्यकारों, कलाकारों, मूर्तिकारों एवं विद्वानों को बहुत मान-सम्मान मिलता था। उन्होंने महेश्वर में वस्त्र उद्योग स्थापित किया था, जो महेश्वरी साड़ियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

अहिल्याबाई होलकर ने जनहित में अनेक उत्कृष्ट कार्य किए, जिन्होंने उन्हें अमर कर दिया। उन्होंने न केवल अपने राज्य में विकास कार्य किए, अपितु राज्य के बाहर भी अनेक जन कल्याणकारी कार्य किए। उन्होंने कई तीर्थ स्थानों पर अनेक मंदिर, घाट, कुएं, बावड़ियां, धर्मशालाएं, आश्रम, अन्नसत्र एवं प्याऊ का निर्माण भी कराया। इनमें वाराणसी, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, गया, द्वारका, सोमनाथ, बद्रीनारायण, जगन्नाथ पुरी एवं रामेश्वर आदि सम्मिलित हैं। उन्होंने नदियों पर बने घाटों पर महिलाओं के स्नान के लिए अलग से व्यवस्था की, जिससे महिलाएं सुरक्षित वातावरण में निर्भय होकर स्नान कर सकें। इसके अलावा वे त्यौहारों पर मंदिरों को बहुत दान देती थीं। उन्होंने एक छोटे से ग्राम इंदौर को एक समृद्ध एवं विकसित नगर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया।

उन्होंने महिला शिक्षा, विधवाओं की स्थिति सुधारने पर भी विशेष ध्यान दिया। उस समय के कानून के अनुसार यदि कोई महिला विधवा हो जाए एवं उसका पुत्र न हो, तो उसके पति की पूरी संपत्ति राजकीय कोष में जमा कर दी जाती थी, परंतु अहिल्याबाई होलकर ने इसमें संशोधन करके विधवा महिला को अपने पति की संपत्ति लेने का अधिकार दिया। इससे उनके राज्य की विधवा महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार हुआ।

उनकी जन कल्याणकारी नीतियों का परिणाम है कि जब तक भारतीय संस्कृति है, तब तक हमें अहिल्याबाई के चरित्र से प्रेरणा मिलती रहेगी।

इतिहासकार चिंतामणि विनायक वैद्य के अनुसार- "अहिल्याबाई की धार्मिकता इतनी उदार थी कि धर्म एवं नीति के हर क्षेत्र में उन्होंने अपना नाम अजर-अमर कर दिया। उनका दान-धर्म इतना महान था कि वैसा दान-धर्म आज तक हिंदुस्तान में किसी ने नहीं किया है।" निःसंदेह अहिल्याबाई होलकर एक पुण्य आत्मा थीं, जिससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। ■

शक्ति व नीति की जीवंत प्रतीक

ऋचा सिंह
शिक्षिका एवं नारी कल्याण अध्येता, कुशीनगर

एक माँ के समान अहिल्याबाई अपनी प्रजा की बातों को ध्यान से सुनती थीं और जहां तक हो सकता था लोगों के कष्ट दूर करने के उपाय भी करती थीं। उनकी नई राजधानी महेश्वर-कला, साहित्य और सृजन का केंद्र बन गयी थी।

भारतीय इतिहास अनेक शौर्य और पराक्रम की गाथा से भरा है। तीन शताब्दी पूर्व हुई ऐसी ही शिवत्व को प्राप्त नारी शक्ति की जीवन्त प्रतीक देवी अहिल्याबाई होलकर का नाम अग्रणी है। आज भी महेश्वर के घाट में नर्मदा और शिव के प्रति अहिल्याबाई होलकर की श्रद्धा की कहानी कहते हैं। होलकर राज्य को कठिन समय में सुयोग्य नेतृत्व, संरक्षण और स्थायित्व प्रदान करने वाली महारानी अहिल्याबाई होलकर ने अपने शौर्य, विवेक, राजनीतिक समझ और परोपकार से न केवल अपना साम्राज्य चलाया बल्कि आधुनिक समाज के लिए ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जो भारत के महान नारीत्व के प्रतीक हैं।

अहिल्याबाई की धार्मिक चेतना ही उनकी वास्तविक शक्ति थी। उन्होंने धर्म को अपने जीवन में धारण किया था। वे कहती थीं कि यह राज्य मेरा नहीं भगवान शिव का है और शिव को अर्पित कर ही राजकार्य देखती थीं। अपने संघर्षपूर्ण जीवन में उन्होंने अपने श्रेष्ठ, धार्मिक, सामाजिक कार्यों से सारे देश में प्रशस्ति प्राप्त की। मालवा के सूबेदार मल्हारराव होलकर ने उनके गुणों से प्रभावित आठ वर्षीय कन्या अहिल्या को अपनी पुत्रवधू बनाने का निश्चय कर लिया था। बाल्यावस्था से ही घर में अहिल्या को पढ़ने लिखने की शिक्षा और धर्म ग्रंथों के प्रति श्रद्धा और संस्कार प्राप्त था। ससुराल में आकर श्वसुर के प्रोत्साहन से धीरे-धीरे उन्होंने राजकार्य में भी कुशलता प्राप्त कर ली। उनकी बुद्धि तथा कार्य कुशलता से मल्हारराव अत्यंत प्रभावित थे।

1764 में कुम्भेर के युद्ध में रानी अहिल्याबाई के पति खांडेराव वीरगति को प्राप्त हो गए और इसके साथ ही रानी अहिल्याबाई के संघर्षो और दुखों का चक्र प्रारम्भ हो गया। अहिल्याबाई पति के शव के साथ सती होना चाहती थीं। मल्हारराव ने उन्हें समझाते हुए कहा, बेटी मैंने तुम्हें कभी पुत्र से कम नहीं समझा, तुम चली जाओगी तो मुझे कौन संभालेगा। मैंने तुमको राजकाज की शिक्षा दी है और कभी भी अपने पुत्र से कम नहीं माना अब तुम्हें ही शासन की बागडोर संभालनी होगी, मैं समझूंगा अभी मेरा पुत्र जीवित है। अहिल्याबाई ने दत्तचित्त होकर प्रजा की सेवा करना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय बाद ही श्वसुर मल्हारराव की भी मृत्यु हो गई।

अब उनका पुत्र मालेराव होलकर गद्दी पर बैठा किंतु दुर्भाग्य से वह भी काल का ग्रास बन गया। ऐसी विपदा में भी देवी अहिल्याबाई ने अत्यंत धैर्य के साथ राज्य की स्थिति संभाली। एक माँ की तरह वह अपनी प्रजा के सुख-दुख का ध्यान रखती और उसकी भलाई के लिए सदैव प्रयासरत रहती। कोई भी व्यक्ति उनके पास जाकर अपना कष्ट कह सकता था। उनकी उदारता और स्नेहपूर्ण व्यवहार के कारण प्रजा उन्हें 'माँ साहब' कहती थी। देवी अहिल्याबाई ने अनेक तीर्थ स्थानों और मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, धर्मशालाओं, मार्गों, विश्रामशालाओं और प्याऊ का निर्माण करवाया, सड़कों के दोनों ओर वृक्ष लगवाए। उन्होंने गरीबों और अनाथों के भोजन की व्यवस्था की। अपनी सूझ-बूझ से राज्य से डाकू, लुटेरों का संकट मिटा दिया। माँ नर्मदा के प्रति श्रद्धा होने के कारण उन्होंने तीर्थ नगरी महेश्वर को ही अपनी राजधानी बना लिया और वहां एक साधारण घर में तपस्वी के समान निवास करने लगीं। एक माँ के समान अहिल्याबाई अपनी प्रजा की बातों को ध्यान से सुनती थीं और जहां तक हो सकता था लोगों के कष्ट दूर करने के उपाय किया करती थीं। उनकी नई राजधानी महेश्वर कला, साहित्य और सृजन का केंद्र बन गयी थी। कहते हैं उनके काल में कारीगरों के छैनी, हथौड़ी की आवाज कभी बंद नहीं हुई। आज भी यह नगर महेश्वरी साड़ी के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। धर्म, पुण्य और परोपकार के कार्य करते हुए अंततः 1795 ई. में 70 वर्ष की अवस्था में माता अहिल्याबाई गोलोकवासी हो गईं लेकिन उनका कृतित्व और परोपकार आज भी अमर है। उनका लंबा राज्य प्रबंधन आज भी 'इफेक्टिव गवर्नमेंट' के मॉडल के रूप में याद किया जाता है। अहिल्याबाई की कीर्ति विश्व स्तर पर है। ग्रेट लीडर्स क्विन में उनकी गिनती की जाती है।

अपने जीवन काल की विकट परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ जो राज्य प्रबंधन अहिल्याबाई ने किया वह अविस्मरणीय रहेगा। इंदौर में प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव मनाकर भारतवासी अपनी 'माँ साहब' को जन-जन की सांस्कृतिक चेतना में जीवंत बनाए हुए हैं। ■

संघ के विचार, व्यवहार और दर्शन का विस्तार काल

संघ यात्रा की श्रृंखला में इस बार वर्ष 1935 से 1945 तक की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अनेक गतिविधियों पर यह लेख प्रकाश डालता है। जिसके माध्यम से पराधीन भारत में समाज जागृत होकर एकजुट हुआ। इससे न केवल स्वाधीनता आंदोलन को और गति मिली बल्कि 'स्व' के प्रति विचार भी पुनर्स्थापित हुआ।

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

स्व हिन्दुत्व और राष्ट्र को समर्पित राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ का वर्ष 1925 में रोंपा गया बीज 1935 में अब तरुण पौधा बन चुका था। वर्ष 1940 तक संघ का विस्तार प.पू. डॉ. हेडगेवार की जीवन यात्रा का ही विस्तार है। संघमय डॉक्टर जी के सानिध्य में ही इस संघ यात्रा को समझा जा सकता है। वर्ष 1935 में संघ कार्य के विस्तार को देखते हुए डॉ. हेडगेवार ने तेजस्वी एवं कार्य कुशल स्वयंसेवकों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु दूसरे प्रांतों में भेजना शुरू किया जिससे उनके माध्यम से वहां भी संघ की शाखाएं प्रारंभ हुईं। हिंदी भाषी क्षेत्रों में जाने वाले स्वयंसेवक हिंदी सीखकर और निकट के आंध्र प्रदेश में कार्य विस्तार हेतु तेलुगु भाषा सीखकर जाते। 1927 में संघ के जो नियम, कार्य-पद्धति, अचार-पद्धति आदि निश्चित की गई थी उन पर पुनर्विचार करते हुए अक्टूबर 1935 में श्री अप्पाजी जोशी, श्री दादा साहब देव तथा श्री कृष्ण राव मोहरी के साथ सिंदी में विचार मंथन कर पूज्य डॉक्टर जी ने उन्हें और अधिक परिष्कृत किया। 28 दिसंबर 1935 को पुणे में 500 गणवेशधारी स्वयंसेवकों के संचलन तथा मान वंदना कार्यक्रम को देखकर जनमानस में संघ के प्रति उल्लास का वातावरण बना। संघ कार्य से प्रभावित होकर 1936 में नासिक के पूज्य शंकराचार्य जी ने डॉ. हेडगेवार जी को 'राष्ट्र सेनापति' की पदवी प्रदान करने की घोषणा की। बाद में अपने लिए इस पदवी के उपयोग न करने का डॉ. साहब ने सबसे आग्रह किया था। 24 मार्च 1936 को डॉ. साहब द्वारा जलगांव विभाग में प्रचारक बनकर जा रहे श्री कृष्ण राव वाडेकर को लिखा गया पत्र 'संघ स्थापना विधि' नए स्थान पर कार्य प्रारंभ को लेकर स्वयंसेवक के गुणों की डॉ. साहब की परिकल्पना को निहित किए हुए है। अक्टूबर 1936 में श्री गुरुजी संसार से विरक्त होकर स्वामी विवेकानंद के गुरुभाई स्वामी अखंडानंद जी का शिष्यत्व ग्रहण कर बंगाल चले गए। 1937 में उनके नागपुर वापस आने तक डॉक्टर जी श्री गुरुजी के विषय में चिंतित रहे। 1936 में ही संघ विस्तार हेतु विभिन्न प्रांतों सहित पंजाब के विभिन्न स्थानों पर भी कार्य प्रारम्भ हो चुका था।

2 सितम्बर से 12 नवम्बर 1936 तक डॉ. साहब के नागपुर प्रवास काल में संघ के विचार, दर्शन और व्यवहार पर उनके 10 भाषण अधिकारी वर्ग नागपुर में हुए। इसी वर्ष 25 अक्टूबर 1936 को संघ के एक स्वयंसेवक की माता श्रीमती लक्ष्मी बाई केलकर ने हिन्दू नारी संगठन 'राष्ट्र सेविका समिति' की स्थापना की। हिन्दू स्त्रियों को हिन्दुत्व तथा अपनी रक्षा में समर्थ बनाने के उद्देश्य से इस समिति की स्थापना करने के लिए डॉक्टर जी से उन्होंने कई बार विचार विमर्श किया था।

इस काल में कोल्हापुर में देशी रियासत होने के कारण तब वहां के नरेश छत्रपति राजाराम भोंसले के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध के कारण वहां संघ का कार्य राजा राम स्वयंसेवक संघ के नाम से चला था। अकोला के सम्मेलन में डॉ. साहब ने 28 मार्च 1937 को संघ स्थापना का इतिहास विस्तार पूर्वक बताते हुए संघ के उद्देश्यों की विशालता और उसके लिए विराट संघ शक्ति के निर्माण के लिए

विचारशील हिन्दुओं का आह्वान किया। वर्ष 1937 में पुणे के मारुति मंदिर में घंटा बजाने से समीप स्थित मस्जिद की नमाज में बाधा न पड़े इसके लिए 24 अप्रैल से 14 मई तक सरकारी प्रतिबंध लगाया गया था इसके विरुद्ध हिन्दुओं ने सत्याग्रह प्रारंभ किया। जागरूक हिन्दू के रूप में संघ के स्वयंसेवकों की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका थी। वर्ष 1937 के नागपुर के विजयादशमी उत्सव पर संचालन की 'सावधान' साप्ताहिक अखबार ने विशिष्ट प्रशंसा की थी। 1937 के अंत में स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर के साथ डॉक्टर जी ने विदर्भ प्रांत में भंडारा, अकोला आदि स्थानों की यात्रा की। 1937 के अंतिम दिनों में लगने वाले संघ के शीत शिविरों में नागपुर के 1000 बाल स्वयंसेवकों का शिविर महत्वपूर्ण रहा, जिसका उद्घाटन औंध नरेश के द्वारा हुआ था। इसी वर्ष श्री गुरुजी भी अपने गुरु स्वामी अखंडानंद जी के समाधिस्थ हो जाने के बाद बंगाल से लौट आये थे। 1938 के प्रारंभ में वे पुनः डॉ. हेडगेवार जी के साथ मिलकर फिर से संघ कार्य में जुट गए।

अप्रैल 1938 में हिन्दू युवक परिषद् से संबंधित एक बड़ा सम्मलेन पुणे में हुआ। परिषद् के संभाषण में डॉक्टर जी ने राष्ट्रभक्ति के अनेक महत्वपूर्ण सूत्रों को प्रस्तुत किया। परिषद में ही दूसरे दिन वीर सावरकर ने संघ के विषय में कहा था कि, "संघ भावी हिन्दू राष्ट्र की आशा तथा भावी पीढ़ी निर्माण करने का एकमेव स्थान है।" परिषद् की समाप्ति पर भी डॉक्टर जी का अत्यंत प्रेरक भाषण हुआ जिसमें उन्होंने हिन्दू समाज से छत्रपति शिवाजी महाराज के आदर्श को अपनाने का आग्रह किया। हिन्दू युवक परिषद् के इस विशाल एकत्रीकरण में हुए डॉक्टर जी के उद्बोधन के बाद संघ से जुड़ने वाले हिन्दू युवाओं की संख्या बढ़ गई।

संघ के स्वयंसेवकों ने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन में बड़ी संख्या में प्रतिभाग किया। महाराष्ट्र के आष्टी-चिमूर क्षेत्र में कुछ स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति भी दी। रामटेक 'नगर कार्यवाह' श्री बालासाहेब देशपांडे को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई लेकिन बाद में ब्रिटिश सरकार ने इस सजा को रद्द कर दिया।

15 अगस्त 1938 को डॉक्टर जी, श्री गुरुजी को साथ लेकर नागपुर से वाराणसी, दिल्ली होते हुए लाहौर पहुंचे। लाहौर के अधिकारी शिक्षण वर्ग में 27 अगस्त को डॉक्टर जी ने राजा नरेंद्र नाथ की उपस्थिति में अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया जो आज भी स्मरण किया जाता है। अक्टूबर 1938 में हैदराबाद निजाम की हिन्दू विरोधी नीतियों के विरुद्ध जो सत्याग्रह आरंभ हुआ उसमें संघ के हजारों स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत रूप से उत्साहपूर्वक भाग लिया।

वर्ष 1938 के संघ के नागपुर में शीत शिविर का उद्घाटन करने के लिए स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर आए थे और उन्होंने संघ की अत्यधिक प्रशंसा की थी।

1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया था। उस समय त्रिलोक्यनाथ चक्रवर्ती, वीर सावरकर तथा सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारी एवं दूरदर्शी राजनीतिज्ञ अंग्रेजों की लाचारी से लाभ उठाकर भारत को स्वतंत्र कराने के लिए प्रयत्नशील थे परंतु महात्मा

गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस विपत्ति में फंसे हुए शत्रु पर प्रहार करने को अनुचित मान रही थी। उस समय डॉक्टर जी के नेतृत्व में संघ भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के विषय में चिंतन कर रहा था किंतु उस समय विदर्भ, मध्य प्रांत तथा महाराष्ट्र को छोड़कर पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात इत्यादि में संघ की शाखाएं सशक्त नहीं थी और कई प्रांत ऐसे भी थे जहां संघ कार्य था ही नहीं।

फरवरी 1939 में सिंदी में प्रमुख कार्यकर्ताओं द्वारा संघ की प्रार्थना, आज्ञाएं, प्रतिज्ञा, कार्य-पद्धति, आचार- पद्धति तथा संघ के विधान पर मंथन हुआ और संघ की संस्कृत प्रार्थना तैयार की गयी। संघ की आज्ञाएं पूर्णतया संस्कृत में कर दी गईं।

श्री गुरुजी और श्री विठ्ठलराव पतकी जी ने कलकत्ता जाकर संघ कार्य प्रारंभ किया। कुछ सप्ताह पश्चात श्री गुरुजी नागपुर वापस आ गए और पतकी जी प्रचारक के रूप में कलकत्ता रह गए। इसी काल में भाऊराव देवरस जी ने लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए लखनऊ की शाखा प्रारंभ कर दी थी। श्री बाबा साहब आप्टे के प्रयत्न से कानपुर में संघ शाखा (लखनऊ से पूर्व) चलने लगी थी। वाराणसी, प्रयाग, पंजाब में भी तेजी से संघ कार्य बढ़ रहा था।

1939 में नागपुर के अधिकारी शिक्षण वर्ग के लिए श्री गुरुजी सर्वाधिकारी नियुक्त किए गए थे। इस वर्ग में पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल आदि कई प्रांतों के बहुभाषी स्वयंसेवकों ने भाग लिया था। श्री गुरुजी के संरक्षण में इस वर्ग से निकले स्वयंसेवकों ने संघकार्य के विस्तार को और गति प्रदान की। संघ की सशक्त होती स्थिति को देखते हुए पुणे के एक उद्‌बोधन में डॉक्टर जी ने कहा था कि, "अब संघ का विनाश बाहर की कोई शक्ति नहीं कर सकती। यदि किसी ने संघ पर आघात किया तो उसे वही अनुभव हो जो फौलाद के कठोर गोले पर प्रहार करने वाले हाथों को होता है।"

20 जून 1939 को डॉक्टर जी ने एक प्रयोग किया, उन्होंने पुणे के संघचालक श्री विनायक राव आप्टे को बुलाकर कहा कि 2 घंटे में पुणे के सभी स्वयंसेवकों को पूर्ण गणवेश में शिवाजी मंदिर संघ स्थान पर एकत्र कीजिए। ठीक 8:00 बजे स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में उपस्थित हो गए। इसके बाद दिए अपने उद्‌बोधन में आपातकाल में एकत्र होने की स्वयंसेवकों की प्रवृत्ति को डॉक्टर साहब ने स्पष्ट करते हुए कहा कि आपातकाल में पुलिस और सरकारी विभाग वेतन के लिए दौड़-भाग करते हैं परंतु यदि बिना वेतन लिए, देशभक्ति से प्रेरित होकर, निजी कामों को त्यागकर संघ के आह्वान पर उत्तर देने वाले स्वयंसेवकों की विशाल संख्या सदा तैयार रहे तो पूरे भारतवर्ष के बुरे दिन समाप्त हो सकते हैं।

अगस्त क्रांति ढाई माह में ही असफल हो गयी। जिन प्रश्नों का उत्तर आन्दोलन से जुड़े नेता नहीं दे पाए थे उनका उत्तर जनता को श्री गुरुजी के उद्‌बोधनों में मिलने लगा था। नवम्बर 1943 में लाहौर के एक कार्यक्रम में श्री गुरुजी ने स्पष्ट किया कि संघ का उद्देश्य छुआछूत की भावना को मिटाना और हिन्दू समाज के सब वर्गों को एकता के सूत्र में पिरोना है।

13 अगस्त 1939 को नागपुर के गुरु पूर्णिमा उत्सव के अवसर पर डॉक्टर जी ने श्री गुरुजी को सरकार्यवाह घोषित किया। संघ के इस भव्य उत्सव का समाचार महाराष्ट्र के केसरी, मद्रास के संडे टाइम्स, कोलकाता के अमृत बाजार पत्रिका, प्रयाग के लीडर, दिल्ली के हिन्दू आउटलुक और लाहौर के ट्रिब्यून आदि अनेक पत्रों में प्रकाशित हुआ।

जून 1940 तक संघ कार्य का विस्तार देश के अनेक प्रांतों में हो चुका था। नागपुर में अधिकारी वर्ग के दीक्षांत कार्यक्रम में डॉक्टर जी का एक उद्‌बोधन हुआ उस समय डॉक्टर जी अत्यंत अस्वस्थ एवं कष्ट की अवस्था में थे। उनका यह उद्‌बोधन उनके अंतिम संदेश के रूप में ग्रहण किया जाता है और सभी स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

20 जून को नेताजी सुभाष चंद्र बोस अपने नागपुर प्रवास के समय गंभीर रूप से अस्वस्थ डॉ. हेडगेवार से मिलने आए थे परंतु वे सो रहे थे, नेताजी उन्हें प्रणाम कर लौट गये। 21 जून 1940 को डॉ. हेडगेवार ने मातृभूमि की सेवा करते-करते इस नश्वर देह को त्याग दिया। जिस बीज का उन्होंने रोपण किया था उसके जीवंत एवं देदीप्यमान वटवृक्ष बनने का मूलमंत्र वे हमें दे गए हैं।

3 जुलाई 1940 को पूज्य डॉक्टर साहब के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में श्री गुरुजी की नए सरसंघचालक के रूप में घोषणा की गयी। संघ की बढ़ती शक्ति से घबराकर अंग्रेजों ने 1940 में संघ के सैनिक पद्धति को लेकर टिप्पणी करते हुए इस पर अघोषित प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया जिसे श्री गुरुजी ने उचित उत्तर देकर विफल कर दिया। संघ के स्वयंसेवकों ने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन में बड़ी संख्या में प्रतिभागिता की। महाराष्ट्र के आष्टी-चिमूर क्षेत्र में कुछ स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। रामटेक 'नगर कार्यवाह' श्री बालासाहेब देशपांडे को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई लेकिन बाद में ब्रिटिश सरकार ने इस सजा को रद्द कर दिया।

अगस्त क्रांति ढाई माह में ही असफल हो गयी। जिन प्रश्नों का उत्तर आन्दोलन से जुड़े नेता नहीं दे पाए थे उनका उत्तर जनता को श्री गुरुजी के उद्‌बोधनों में मिलने लगा था। नवम्बर 1943 में लाहौर के एक कार्यक्रम में श्री गुरुजी ने स्पष्ट किया कि संघ का उद्देश्य छुआछूत की भावना को मिटाना और हिन्दू समाज के सब वर्गों को एकता के सूत्र में पिरोना है। संघ कार्य में ब्रिटिश तंत्र द्वारा अवरोध उत्पन्न न किया जाए, इसलिए 1943 में संघ का सैनिक विभाग औपचारिक रूप से बंद कर दिया गया।

1945 तक श्री गुरुजी के संरक्षण में संघ दृढ़ता से उस दिशा में बढ़ रहा था जिसका निर्देशन पूज्य डॉक्टर जी कर गये थे। अब भारत के दक्षिण में भी संघ कार्य का विस्तार हो रहा था, श्री गुरुजी स्वयं स्थान-स्थान पर प्रवास कर स्वयंसेवकों का उत्साह बढ़ा रहे थे।

शेष अगले अंक में...

पंच परिवर्तन के प्रेरक

संघ एक सांस्कृतिक, सामाजिक संगठन है और इसका आधार है भारत की संस्कृति, भारत का तत्व, भारत की परम्परा। संघ के चारित्र्य में प्रारम्भ से ही हिन्दू दृष्टि और हिन्दू जीवन पद्धति निहित है। जिनमें से पंच संकल्प को शताब्दी वेला में संघ पूरे समाज में लेकर जाएगा क्योंकि वर्तमान में सारे विश्व को इसकी महती आवश्यकता है।

'स्व'

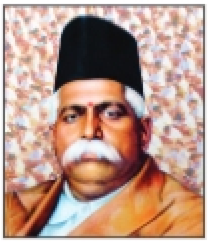

राष्ट्र किसी रिक्त स्थान को नहीं कहते। संस्कृति, धर्म, इतिहास और परम्परा से राष्ट्र बनता है। इतिहास के प्रथम पृष्ठों पर भी इसका नाम हिन्दुस्थान है। 'आर्यावर्त' व 'भरतखंड' नामों से भी इस राष्ट्र के उन्नत स्वरूप का ही बोध होता है, कुछ और नहीं। परन्तु आज विश्व में हिन्दुस्थान के निवासियों के लिए प्रयुक्त नाम देखिए! जिस राष्ट्र ने सबके जन्मदिन देखे हैं, उस पुरातन राष्ट्र का नामकरण करने की यह इच्छा क्यों हुई? परन्तु धूर्त अंग्रेजों के राज्य में तो चाहे जो हो जाए। उन्होंने 'इण्डिया' नाम रखा और हमारे बाल-बुद्धि नेताओं ने उसे हिन्दुस्थान का अनुवाद भी मान लिया। नाम-विशेष जैसी व्यक्तिवाचक संज्ञा का अनुवाद करने का अधिकार अंग्रेजों को किसने दिया? हम लोगों को अपने देश से जो लगाव है उसको नष्ट करने और हमारा मन मारकर हमारे स्वाभिमान को समाप्त करने के कुटिल हेतु से यह किया गया है, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उद्देश्य है ही नहीं। हमारा स्वाभिमान नष्ट करने, जो बाहर के लोग यहां आए उन्हें हमारे देश पर अधिकार जताने के लिए हमारे विरुद्ध भड़काने और झगड़े उत्पन्न करने के लिए यह नामांतर किया है।

– डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (आद्य सरसंघचालक)

सामाजिक समरसता

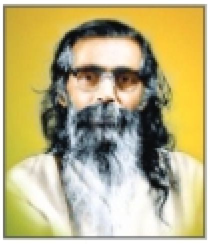

अस्पृश्यता रोग की जड़ जनसामान्य के इस विश्वास में निहित है कि यह धर्म का अंग है और इसका उल्लंघन महापाप होगा। यह विकृत धारणा ही वह मूल कारण है, जिससे शताब्दियों से अनेक समाज-सुधारकों एवं धर्म-धुरंधरों के समर्पित प्रयासों के बाद भी यह घातक परंपरा जनसामान्य के मन में आज भी घर किए बैठी है।

– श्री गुरुजी (द्वितीय सरसंघचालक)

नागरिक कर्तव्य

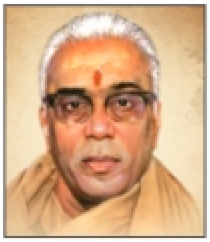

संघ की शाखा केवल खेल खेलने अथवा कदमताल करने का स्थान नहीं है, बल्कि समाज के श्रेष्ठ नागरिकों की रक्षा का एक अनकहा वायदा है, युवाओं को अवांछित नशों से दूर रखने का एक सांस्कृतिक मंच है। संकट के समय लोगों की बिना शर्त सेवा तथा त्वरित कार्रवाई के लिए आशा की एक किरण है। यह महिलाओं के निर्भय होकर विचरण करने तथा उनके प्रति असभ्य व्यवहार करने वालों को रोकने की एक सशक्त गारंटी है, अमानवीय तथा राष्ट्र विरोधी ताकतों के समक्ष उपस्थित एक सशक्त ताकत है। किंतु इसका महत्वपूर्ण आयाम यह है कि यह उपयुक्त कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की एक पाठशाला है।

– बाला साहब देवरस (तृतीय सरसंघचालक)

कुटुंब प्रबोधन

परिवार परस्पर प्रेम, आनंद और आत्मीय संबंध से तरुण, प्रौढ़ सभी परिवार के सदस्यों को बांधता है और इसलिए इसका महत्व है। परिवार में ही मातृभाषा, धार्मिक संस्कार और जीवन के आदर्श का विकास होता है।

–प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया' (चतुर्थ सरसंघचालक)

पर्यावरण

गिलास में उतना ही पानी भरें जितना पीने लायक हो। पानी बर्बाद न करें, गिलास के बचे पानी को केवल वॉशबेसिन में फेंकने के लिए न भरें। पानी पवित्र है और दुर्लभ है।

– कुपाहल्ली सीतारमैया सुदर्शन (पंचम सरसंघचालक)

संघ स्थापना में भारत की सर्वांग स्वतंत्रता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने पर 'संघ : जैसा मैंने देखा' श्रृंखला में इस बार 95 वर्षीय वरिष्ठ स्वयंसेवक वासुदेव जी से प्रेरणा टीम ने विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है संपादित अंश

वासुदेव जी, वरिष्ठ स्वयंसेवक

संघ अर्थात् क्या? समाज के अनेक बंधु अपने जीवन काल का महत्वपूर्ण समय देकर सदियों से सुप्त हिन्दू समाज को, जो अपने गौरव और स्वाभिमान को विस्मृत किए हुए हैं उसे जगाने के लिए, हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू राष्ट्र को शक्तिशाली रूप में खड़ा करने के लिए शाखाओं के माध्यम से प्रतिदिन उपस्थित रहकर कार्य में लगे हुए हैं। ऐसे उन व्यक्तियों का संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। संघ की प्रार्थना में संघ का लक्ष्य, स्वयंसेवकों के लिए कर्तव्य निहित है। संघ यह मानता है कि महान और गौरवशाली विरासत वाला अपना यह राष्ट्र पराधीन हुआ उसका कारण था हिन्दू समाज में संगठन का अभाव। इसलिए अपने राष्ट्र को पुनः वैभव संपन्नता एवं सर्वांग स्वतंत्रता देने के मंथन से ही संघ की स्थापना हुई। मैं 1 जुलाई 1945 को स्वयंसेवक बना था। संघ की स्थापना में ही भारत की सर्वांग स्वतंत्रता निहित थी। संघ संस्थापक पूज्य डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने मात्र 8 वर्ष की आयु में रानी विक्टोरिया के 60 वर्ष पूर्ण होने पर विद्यालय में बांटी गई मिठाई को फेंक कर यह सिद्ध कर दिया था कि उनके मन में बाल्यावस्था से ही पराधीनता के प्रति वेदना थी। हाई स्कूल में पढ़ते हुए वंदे मातरम का उद्घोष अपनी कक्षा में करना, युवावस्था में अनुशीलन समिति जैसे क्रांतिकारी संगठन का सदस्य होना और तत्कालीन कांग्रेस द्वारा गांधी जी के नेतृत्व में किए जा रहे आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेना उनका स्वतंत्रता सेनानी होना स्वतः सिद्ध करता है। आंदोलन में भाग लेते हुए वह दो बार जेल भी गए। वर्ष 1916 में मुस्लिमों के लिए निर्वाचन क्षेत्रों में विशेष स्थिति और खिलाफत आन्दोलन के समय कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति को देखते हुए तथा क्रांतिकारियों को भी पूर्ण सफलता नहीं मिलने पर अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ मंथन कर उन्होंने 1925 में नवीन संगठन की स्थापना की, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में आज हमारे सामने है। संघ की स्थापना के बीज में ही क्रांति का तत्व और स्वतंत्रता का विचार निहित है। कांग्रेस के एक अधिवेशन में जब सुराज का प्रस्ताव रखा गया तब डॉ. साहब ने कहा हम सुराज नहीं स्वराज चाहते हैं। इस तरह संघ स्थापना के पश्चात् डॉक्टर जी स्वयं भी और संघ के स्वयंसेवक निरंतर कांग्रेस, गांधी जी और विभिन्न क्रांतिकारियों के संपर्क में रहते हुए स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय रहते थे। ऐसे स्वयंसेवकों में से मैं भी एक हूं जो विभिन्न सम्मेलन और यात्राओं में अपने विद्यार्थी साथियों के साथ भाग लेता था। हम सब मिलकर अंग्रेजों के विरोध में गीत भी गाते थे। कोलकाता में डॉक्टरी की पढ़ाई करते हुए डॉक्टर जी अनुशीलन समिति के साथ जुड़े और उन्होंने यह पाया कि क्रांतिकारी आंदोलन भी बहुत अधिक सफल नहीं हो पा रहा था। एक आंकड़ा बताता है कि ब्रिटिश समय में 3 लाख 30 हजार क्रांतिकारियों को फांसी पर लटका दिया गया था। देश के जनमानस के लिए यह निराशाजनक था। इसलिए संघ अपने माध्यम से हजारों युवाओं को बड़ी क्रांति के लिए तैयार कर रहा था। मैंने भी संघ की प्रतिज्ञा में मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्रतिज्ञा ली थी, संकल्प लिया था कि आजादी लेकर रहेंगे। जब 15 अगस्त 1947 को देश

> **संघ मानता है कि जिस प्रकार गंगोत्री से गंगासागर तक अनेक नदियां गंगा जी में समाहित हो जाती हैं उसी प्रकार हजारों वर्ष प्राचीन अपनी संस्कृति के प्रवाह में सभी पंथ सम्प्रदाय एकरूप हो सकते हैं। इसके लिए अपनी पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज त्यागने की आवश्यकता नहीं है, केवल कट्टरता को त्यागने की आवश्यकता है।**

को आजादी मिली तब हम खुश भी थे और व्यथित भी, क्योंकि 14 अगस्त को पाकिस्तान की घोषणा भी हुई थी, देश का विभाजन हो गया था। पूर्व में भी हमारी अखंड मातृभूमि को खंडित किया जा चुका था लेकिन इस बार यह अत्यंत कष्टकारक था। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, पटेल जी ने भी देश विभाजन का विरोध किया था लेकिन धर्म के आधार पर विभाजन दुखदायी था। लगभग 13 लाख हिन्दुओं का कत्लेआम हुआ। इस कठिन परिस्थिति में संघ शरणार्थी हिन्दुओं के लिए सेवा में जुटा था। मैं भी शरणार्थी कैम्प में सेवा के लिए अपने साथियों के साथ उपस्थित था। उस समय गांधी जी के विरोध में बहुत लोग हो गए थे क्योंकि एक तो गांधी जी देश विभाजन नहीं रोक पाए और दूसरा उन्होंने एक बड़ी धनराशि पाकिस्तान को दिलवाई। 1948 में गांधी जी की दुर्भाग्यपूर्ण हत्या हो गई और तब जवाहरलाल नेहरु जो संघ की निरंतर बढ़ती शक्ति से परेशान थे। उन्हें अवसर मिल गया और उन्होंने दुर्भावनापूर्ण रूप से गांधी जी की हत्या में संघ का हाथ होने का आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबंध लगवाया। यह काल हमारे लिए बड़ा संकट का था। स्वयंसेवकों को जेलों में डाल दिया गया। मैं भी आगरा जेल में बंद था। लेकिन उस समय भी हमारी गतिविधियां जारी थी, हम शाखा में ध्वज नहीं लगाते थे, प्रार्थना नहीं करते थे, लेकिन खेल-कूद, व्यायाम और गोष्ठी चलती थी। बाद में कोर्ट ने भी संघ को गांधी जी की हत्या के विषय में निर्दोष माना।

मेरे जीवन की घटना है मैं मेरठ के पास परीक्षितगढ़ में एक इंटर कॉलेज में अध्यापक था, वहां पर गांधी जी के जन्म दिवस पर निबंध लिखवाया गया और निबंध में गांव के दो बालकों ने गांधी जी को लेकर कुछ गलत लिखा तो उनके कक्षा अध्यापक ने यह सोचा कि मैं संघ में जाता हूं तो शायद यह संघ के बालक हैं। कक्षा अध्यापक ने पूछा क्या तुम दोनों संघ में जाते हो, बालकों ने कहा हां हम संग में (यानी साथ में) जाते हैं। प्रधानाचार्य पर रिपोर्ट पहुंची और प्रधानाचार्य ने मुझको निलंबित कर दिया। बाद में बच्चों के अभिभावकों से पूछताछ हुई तब पता लगा कि वह संघ व संग की गलतफहमी थी। कांग्रेस ने संघ को कमजोर करने के लिए ऐसी ही गलतफहमी समाज में पैदा की।

जून 1975 में आपातकाल लगा तब भी संघ को प्रतिबंधित किया गया। मैं उस समय फिरोजाबाद में संघ शिक्षा वर्ग में था। रात में समाचार आया कि देश के अंदर आपातकालीन घोषणा हो गई है, वर्ग समाप्त कर दिया गया। ऐसे में हम लोग गोष्ठियों और कवि सम्मेलनों के द्वारा जनता में जागरूकता का काम करते थे। आपातकाल में लगभग 93000 स्वयंसेवक पूरे देश में जेल में डाले जा चुके थे। इसके बाद भी हम लोग पैदल और साइकिल के द्वारा संपर्क करते थे। अपनी यात्रा करते हुए एक स्वयंसेवक के रूप में मैंने राम मंदिर आन्दोलन को भी नजदीक से देखा जिसमें स्वयंसेवकों की बड़ी भूमिका थी। राम मंदिर आन्दोलन से जुड़ी सीताराम यात्रा, राम शिला पूजन यात्रा और भारत माता यात्रा में हम स्वयंसेवक बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर गांव-गांव तक पहुंचे और जनता को जगाया। हम लोगों को यह भी बताते थे कि राम मंदिर को पुनः स्थापित करने हेतु हमारे पूर्वजों ने तब से अब तक 73 बार प्रयत्न किया, लाखों ने बलिदान दिया। राम मंदिर हमारी आस्था और अस्मिता से जुड़ा है इससे जनता में जागृति आई और भव्य श्री राम मंदिर के रूप में परिणाम हमारे सामने है। वर्ष 1992 में बाबरी ढांचे के विध्वंस के बाद भी संघ पर प्रतिबंध लगाया गया लेकिन इस बार यह प्रतिबंध नाम मात्र का था। 1993 से संघ का विस्तार और अधिक होता गया। संघ विस्तार की प्रक्रिया निरंतर चल रही है। जब तक संघ और समाज एक नहीं हो जाएंगे तब तक यह क्रिया चलती रहेगी। संघ में आने वाले स्वयंसेवक अपने दैनिक जीवन में से कुछ समय अपने समाज के लिए निकालते हैं, कुछ लोग अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर देते हैं, आज बड़ी संख्या में युवा संघ से जुड़ रहे हैं। संघ मुस्लिमों अथवा अन्य किसी भी समुदाय का विरोधी नहीं है। इस झूठ को केवल राजनीति से प्रेरित लोग वोट बैंक के लिए प्रचारित करते हैं। संघ मानता है कि जिस प्रकार गंगोत्री से गंगासागर तक अनेक नदियां गंगाजी में समाहित हो जाती हैं उसी प्रकार हजारों वर्ष प्राचीन अपनी संस्कृति के प्रवाह में सभी पंथ-सम्प्रदाय एकरूप हो सकते हैं। इसके लिए अपनी पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज त्यागने की आवश्यकता नहीं है केवल कट्टरता को त्यागने की आवश्यकता है, हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रीय मुख्य धारा वेद काल से चलती आई है उसमें बिना अपना अस्तित्व खोए कोई भी उसका अंग बना रह सकता है।

आज के युवाओं से कहना चाहूंगा कि संघ को संघ में आकर ही सीखा जा सकता है। बाहर से संघ को समझ पाना संभव नहीं। संघ से चरित्र बनता है। आज मैं 95 वर्ष का हूं और मुझे गर्व है कि 1 जुलाई 1945 से आज तक मैं संघ की शाखा का नियमित स्वयंसेवक हूं। यह संघ की ही देन है कि मैं इस आयु में भी पूर्ण स्वस्थ, सक्रिय रहते हुए अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हूं। ■

स्वतंत्रता आन्दोलन में संघ की भूमिका पर झूठा नैरेटिव क्यों?

भारत के साथ सबसे बड़ी विडंबना यही रही है कि पराधीनता काल में भारत तत्व को नष्ट करने का पुरजोर प्रयास विदेशी आक्रान्ताओं ने तो किया ही, वहीं उसको पुष्ट करने के लिए माँ भारती की कोख से जन्म लेने वाले कुछ बुद्धिजीवियों ने भी अपनी पूरी शक्ति लगा दी। ऐसे कुछ कपूत आज भी हैं जिन्होंने नई पीढ़ी को भारत के ऐतिहासिक तथ्यों से अनभिज्ञ रखा और अनेक तथ्यों को तोड़-मरोड़कर, विकृत अथवा असत्य रूप में प्रसारित किया। ऐसा ही एक कुत्सित प्रयास है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान न होने का झूठा नैरेटिव स्थापित करना। जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम में ही राष्ट्रीयता, स्व-इच्छा और संगठित शक्ति का उद्घोष होता है फिर यह सोचा भी कैसे गया कि राष्ट्र को विदेशी लुटेरों से मुक्त कराने की अभीप्सा संघ के चारित्र्य में न हो? कदाचित् यह संभव इसलिए हुआ कि संघ की स्थापना काल से प्रसिद्धि परांगमुखता इसका स्वभाव रहा। स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय यज्ञ में अपनी आहुति संघ के स्वयंसेवक के रूप में नहीं अपितु एक भारतीय होने के नाते से दी। 'हिमगिरी से चुपचाप गलें' का मन्त्र धारण कर कार्य सिद्धि की ओर अनवरत धारा बनकर प्रवाहशील रहे। बाल क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का देखा गया स्वप्न यही था। इस विचार मंथन का परिणाम ही था कि वर्ष 1925 को विजयादशमी के दिन रोपा गया यह पौधा मात्र 2 वर्षों में संगठित हिन्दू शक्ति के रूप में बड़ा वृक्ष बन गया था। 1927 में नागपुर तथा वर्धा में स्वयंसेवकों की संख्या तीन हजार का आंकड़ा पार कर गई थी। मार्च 1928 में नागपुर के निकट एक पहाड़ी पर स्वयंसेवकों ने भगवा ध्वज के समक्ष प्रतिज्ञा ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम में ही राष्ट्रीयता, स्व-इच्छा और संगठित शक्ति का उद्घोष होता है फिर यह सोचा भी कैसे जा सकता है कि राष्ट्र को विदेशी लुटेरों से मुक्त कराने की अभीप्सा संघ के चारित्र्य में न हो?

थी कि देश की पूर्ण स्वतंत्रता तथा विकास के लिए वीरव्रत को धारण करेंगे। स्वयंसेवकों की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रतिज्ञा का यह पहला सामूहिक आयोजन था यद्यपि इसके पूर्व संघ में माँ भारती की तत्कालीन पराधीनता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का चिंतन-मनन भी होता था और शारीरिक व्यायाम-अनुशासन पद्धति के द्वारा युवाओं को इस योग्य बनाने का उपक्रम भी। इसी में डॉक्टर जी ने कहा था -'हमारा उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता है। संघ का निर्माण इसी महान लक्ष्य के लिए हुआ है।' प्रतिज्ञा में स्वयंसेवक भगवा ध्वज के सामने प्रणाम की स्थिति में 'दक्ष' में खड़े होकर निश्चय करते थे- 'मैं अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तन-मन-धन पूर्वक आजन्म और प्रामाणिकता से प्रयत्नरत रहने का संकल्प लेता हूं।'

स्वाधीनता के उद्देश्य हेतु संघ कार्य को सम्पूर्ण भारत में विस्तार देने हेतु अनेक युवा कार्यकर्ता देश के विभिन्न प्रांतों में विद्यार्थी प्रचारक के रूप में जाने लगे। 'हिम्मत रखो', 'कष्टों को वरदान समझकर सहन करो', 'हिन्दू संगठन आज के भारत की परम आवश्यकता है', 'हम नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा?', 'अपना कार्य ईश्वरीय कार्य है', 'निराश मत होना।' डॉक्टर जी के द्वारा स्वयंसेवकों को लिखे पत्रों में ऐसे भाव स्पष्ट करते हैं कि मातृभूमि के प्रति चिंतन प्रत्येक स्वयंसेवक के दिन-रात का संकल्प था।

संगठन को विस्तार देते हुए भी डॉ. हेडगेवार ने कांग्रेस की आंदोलनात्मक गतिविधियों में भाग लेने का क्रम छोड़ा नहीं, बल्कि उन्होंने स्वयंसेवकों को महात्मा गांधी के नेतृत्व में होने वाले सभी सत्याग्रहों एवं इसी तरह के आंदोलनों में भाग लेने के आदेश भी दिए। उल्लेखनीय है कि 1929 में वर्धा में डॉ. हेडगेवार ने कहा था- 'ब्रिटेन की सरकार ने अनेक बार भारत को स्वतंत्र करने का

आश्वासन दिया है, परंतु वह झूठा साबित हुआ। अब यह साफ हो गया कि भारत अपने बल पर स्वतंत्रता प्राप्त करेगा। "इसी शिविर में स्पष्ट घोषणा की गई कि संघ का अंतिम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सभी स्वयंसेवक अपना सर्वस्व त्याग करने हेतु तैयार रहें।"

जब 1928 में साइमन कमीशन का पूरे भारत में विरोध के लिए हड़ताल तथा विरोध प्रदर्शन का निर्णय हुआ। तब डॉ. हेडगेवार ने भी साइमन कमीशन के विरोध को जन-जन का आंदोलन बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी। अकेले नागपुर में संघ के 1000 स्वयंसेवकों ने साइमन कमीशन का विरोध किया। संघ के स्वयंसेवक संस्थागत भावना से ऊपर उठकर कांग्रेस के तत्त्वावधान में इस आंदोलन में भाग लेते रहे। देश की युवा पीढ़ी को शायद ही यह सच पता होगा कि शहीद भगत सिंह के साथी शहीद शिवराम राजगुरु भी स्वयंसेवक थे।

दिसंबर 1929 में लाहौर में संपन्न कांग्रेस के अखिल भारतीय अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित कर दिया गया तब अखंड भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के ध्वजवाहक डॉ. हेडगेवार ने पूर्ण स्वतंत्रता के इस आधे-अधूरे प्रस्ताव पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए समस्त देश में सभी संघ शाखाओं के नाम एक परिपत्र भेजा, जिसमें लिखा था 'इस वर्ष कांग्रेस ने स्वाधीनता को अपना लक्ष्य निश्चित करके, कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने रविवार 26 जनवरी, 1930 को संपूर्ण भारत में 'स्वाधीनता दिवस' मनाया जाए, ऐसा घोषित किया है।' स्वाभाविक ही संघ के स्वयंसेवकों को इस बात से अपार प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता के हमारे लक्ष्य को स्वीकार कर लिया है। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सभी शाखाएं रविवार 26 जनवरी, 1930 को सायंकाल छह बजे अपने-अपने संघ-स्थानों पर सभी स्वयंसेवकों की सभा आयोजित करके राष्ट्रीय ध्वज का वंदन करें और कांग्रेस का अभिनंदन करें। इस कार्यक्रम की रिपोर्ट मुझे भी भेजें।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के पूर्व कुछ स्वयंसेवकों ने गणवेश पहनकर भगवा ध्वज के साथ सत्याग्रह में जाने की इच्छा प्रकट की। तब डॉक्टर जी ने स्वयंसेवकों की संघ निष्ठा का सम्मान करते हुए उन्हें समझाया- 'आंदोलन में पूरी तरह समरस होने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन किसी दल अथवा एक नेता का नहीं हो सकता। यह सभी देशवासियों का आंदोलन है।'

दिसंबर 1936 में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के अधिवेशन में 90 फीट ऊंचे पोल पर ध्वजारोहण में व्यवधान खड़ा हो गया। भीड़ में से एक युवक किशन सिंह परदेशी झंडे को ऊपर फहराकर ही नीचे उतरा। संघ के स्वयंसेवक होने के नाते अपने राष्ट्रवादी संस्कारों के कारण ही उसने यह काम किया। डॉ. हेडगेवार अपने विद्यार्थी जीवन से ही देशभक्त थे, युवावस्था में ही अनुशीलन समिति जैसे क्रांतिकारी संगठन से जुड़ गये थे। श्री अरविन्द, वीर सावरकर, क्रांतिकारी त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती, डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे सहित अनेक क्रांतिकारियों के साथ उनके संबंध थे। सन् 1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उन्होंने सुभाष चंद्र बोस सहित कई दिग्गज नेताओं के साथ भेंट की थी।

भारतवर्ष की सर्वांगीण स्वतंत्रता के लिए चलाए गए, चल रहे एवं चलाए जाने वाले आंदोलनों, संघर्षों पर डॉक्टर जी की दूरदृष्टि थी। इसी क्रम में अनुशीलन समिति के त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती, अभिनव भारत के संस्थापक वीर सावरकर, भावी आजाद हिंद फौज के सेनापति सुभाषचंद्र बोस, हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्रवादी एवं दूरदर्शी राजनीतिज्ञों के मन भी यही मंथन चल रहा था कि अंग्रेजों की लाचारी का फायदा उठाकर देश को स्वतंत्र करवाने का यह एक सुवर्णावसर है। सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का गठन करके ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर सैनिक भागीदारी भी की। उस समय संघ के कार्य को देखने और समझने के बाद सुभाष चंद्र बोस ने कहा था- 'केवल ऐसे आधारभूत कार्य से ही राष्ट्र का सच्चा पुनरुद्धार किया जा सकता है।' वर्ष 1938 में हैदराबाद के निजाम ने हिंदुओं के ऊपर अत्याचारों का सिलसिला शुरू कर दिया। तब निजाम की हिन्दू विरोधी नीतियों के खिलाफ वीर सावरकर ने ऐतिहासिक भावनगर सत्याग्रह करने की घोषणा की। आर्यसमाज एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस सत्याग्रह में पूरी ताकत के साथ भाग लिया था।

डॉक्टर जी के बाद संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी ने संघ के स्वयंसेवकों का मार्ग निर्देशन किया और निर्धारित संघ संकल्प में कोई बाधा नहीं आने दी। आजाद हिन्द फौज और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के देशव्यापी आंदोलन में संघ के स्वयंसेवक पूरी शक्ति के साथ कूद पड़े। संघ स्वयंसेवकों ने अपनी संघ पहचान को सामने न लाकर स्वतंत्रता आंदोलन में सभी भारतीयों की एकजुटता का परिचय दिया। 1947 में देश स्वाधीन तो हो गया किन्तु स्व का तंत्र इसे अभी भी अर्जित करना है। संघ आज भी उसी ध्येय पथ पर सतत् अग्रसर है। संघ भारत के भारत तत्व से सिंचित है, यह प्रकाश रूप है यहां अंधकार की कोई जरूरत नहीं। इसलिए संघ के विरुद्ध मनगढ़ंत झूठे नैरेटिव का अन्धकार अब धीरे-धीरे छंटने लगा है। ■

डॉ. हेडगेवार अपने विद्यार्थी जीवन से ही देशभक्त थे, युवावस्था में ही अनुशीलन समिति जैसे क्रांतिकारी संगठन से जुड़ गये थे। श्री अरविन्द, वीर सावरकर, क्रांतिकारी त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती, डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे सहित अनेक क्रांतिकारियों के साथ उनके संबंध थे।

प्रेरणा विमर्श आयोजन की झलकियां

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा वर्ष 2020 से राष्ट्रहित के प्रमुख आयामों पर सकारात्मक संवाद के माध्यम से जन जागरण के लिए नीर क्षीर विवेक का कार्य 'प्रेरणा विमर्श' कार्यक्रम के द्वारा कर रहा है। 'प्रेरणा विमर्श' संस्कृति, विरासत, इतिहास, समसामयिक और पंच परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर तथ्यपरक और गूढ़ विश्लेषण के साथ विद्यार्थियों, शोधार्थियों और आम जन को संचार के सभी माध्यमों से सूचना उपलब्ध करा रहा है। प्रस्तुत है प्रेरणा विमर्श आयोजन की झलकियां-

प्रेरणा विमर्श-2024, 'पंच परिवर्तन'

'प्रेरणा विमर्श-2024, पंच परिवर्तन' की शुरुआत 22 नवम्बर को नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ से हुई। इस यज्ञ में प्रबुद्ध महिलाओं, छात्राओं, शिक्षिकाओं, गृहणियों समेत सभी बहनों की अलग-अलग क्षेत्रों से भागीदारी रही। जिसमें नोएडा महानगर की प्रत्येक बस्ती से 8—8 बहनें 108 कुंडीय यज्ञ में सम्मिलित हुईं। इस यज्ञ के पश्चात् (23 एवं 24 नवम्बर) 'प्रेरणा विमर्श -2024 पंच परिवर्तन' के आयामों 'स्व', सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण और नागरिक कर्तव्य पर सारगर्भित विमर्श हुआ। पूरा कार्यक्रम सरस्वती शिशु मंदिर, सेक्टर- 12, नोएडा के प्रांगण में हुआ।

प्रेरणा विमर्श -2023, 'स्व' भारत का आत्मबोध

वर्ष 2023 के प्रेरणा विमर्श की शुरुआत भी नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ से ही हुई थी। जिसमें 108 कुंडीय यज्ञ में 648 माताओं बहनों ने भाग लिया था। विमर्श का यह आयोजन 'स्व' भारत का आत्मबोध विषय पर गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा में हुआ था। इस यज्ञ का संचालन मुख्य आचार्य संस्कृत युवा आदर्श समिति की सचिव प्रवीण विद्या अलंकार व कन्या गुरुकुल हाथरस, सासनी की 11 ब्रह्मचारिणियों ने अपनी शिक्षिका सुमन के नेतृत्व में विधि-विधान से किया। इस यज्ञ के माध्यम से सभी बहनों ने भारत माता की अर्चना कर राष्ट्र के उत्थान में सहयोग देने का व्रत लिया।

प्रेरणा विमर्श- 2022, 'भविष्य का भारत'

प्रेरणा विमर्श की श्रृंखला में 'भविष्य का भारत' विषय को केन्द्र में रखकर 9 से 13 नवम्बर तक प्रेरणा विमर्श- 2022 का आयोजन किया गया था। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में देशभर से चिंतकों, विश्वविद्यालय के कुलपतियों, समाचार पत्रों और टीवी चैनलों के संपादकों, वरिष्ठ पत्रकारों, सोशल मीडिया के दिग्गजों और फिल्म टेलीविजन के प्रमुख हस्ताक्षरों और सम्मानित जनप्रतिनिधियों को मिलाकर लगभग 50 अतिथि वक्ताओं ने विमर्श को सार्थक बनाया। यह आयोजन सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में संपन्न हुआ था।

प्रेरणा विमर्श- 2021, 'भारतोदय : आजादी का अमृत महोत्सव'

भारतोदय एवं मीडिया विषय को केन्द्र में रखकर 24, 25 एवं 26 दिसम्बर को भारतोदयः आजादी का अमृत महोत्सव नाम से प्रेरणा विमर्श-2021 का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में देश के महत्वपूर्ण क्षेत्र के प्रमुख विशेषज्ञ और सम्मानित जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। हर दिन चर्चा सत्र में प्रश्नोत्तर का क्रम रखा गया, जिसमें देशभर से हजारों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

प्रेरणा विमर्श- 2020, 'विरासत'

प्रेरणा जनसंचार एवं शोध संस्थान और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा के जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग के संयुक्त प्रयास से भारत की सांस्कृतिक विरासत और मीडिया विषय को केन्द्र में रखकर 6, 7, 8 और 9 फरवरी 2020 को विरासत नाम से प्रेरणा विमर्श- 2020 का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम को देश के मूर्धन्य चिंतकों, कई विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, समाचार पत्रों एवं टीवी चैनलों के वरिष्ठ पत्रकारों तथा फिल्म टेलीविजन के प्रमुख लोगों और जनप्रतिनिधियों ने इस विमर्श को सार्थक बनाया।

ट्रंप का राष्ट्रपति चुना जाना भारत के लिए सुखद

डॉ. अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

रिपब्लिकन पार्टी के नेता डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के दोबारा राष्ट्रपति बने हैं। उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार एवं उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को चुनाव में हराया है। ट्रम्प की जीत भारत सहित संपूर्ण विश्व के लिए सुखद एवं हितकारी है। उनकी जीत का असर बहुत व्यापक एवं दूरगामी होने वाला है। क्योंकि डोनाल्ड ट्रंप और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में दो बातें बहुत ही समान हैं। दोनों राष्ट्र प्रथम की बात करते हैं और दोनों ही अपने देश को शिखर पर ले जाना चाहते हैं।

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के 47 वें राष्ट्रपति चुने गए हैं। रिपब्लिकन पार्टी के नेता ट्रंप दोबारा अमेरिका के राष्ट्रपति बने हैं। उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार एवं उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को चुनाव में हराया है। ट्रम्प की जीत भारत सहित संपूर्ण विश्व के लिए सुखद एवं हितकारी है। उनकी जीत का असर बहुत व्यापक एवं दूरगामी होने वाला है। हालांकि ऐसा नहीं है कि ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने से भारत के साथ सब कुछ अच्छा हो जाएगा। भारत को कई प्रकार की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ सकता है।

डोनाल्ड ट्रंप और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में दो बातें बहुत ही समान हैं। दोनों राष्ट्र प्रथम की बात करते हैं और दोनों ही अपने देश को शिखर पर ले जाना चाहते हैं। ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार अभियान के दौरान यह कहा था कि अगर वह राष्ट्रपति बनते हैं तो अमेरिका को शिखर पर ले जाने का काम करेंगे। वहीं नरेंद्र मोदी भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं।

डोनाल्ड ट्रंप चीन के कट्टर विरोधी माने जाते हैं। उनके पहले कार्यकाल में अमेरिका और चीन के रिश्ते काफी खराब हो गए थे। दोनों देशों के बीच पहले से ही रिश्ते तनावपूर्ण चल रहे हैं। लेकिन ट्रंप ने इस बार चीन के निर्यात पर एकमुश्त शुल्क लगाने का वादा किया है। चीन अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए निर्यात पर निर्भर है। वह चीनी कंपनियों पर रोक लगाकर ताइवान के साथ व्यापारिक रिश्ते बढ़ा सकते हैं। ऐसे में चीन को भारी नुकसान होगा लेकिन इससे भारत को व्यापारिक लाभ हो सकता है। अर्थशास्त्री सूर्यनारायण मानते हैं कि चूंकि अमेरिका ने चीन पर चीनी वस्तुओं के आयात पर 60 फीसद तक शुल्क लगाने की बात की है। इसलिए भारत के लिए निर्यात के अवसर बढ़ जाएंगे। ट्रंप और मोदी दोनों की मित्रता पहले भी चर्चा में रही है। अतः मोदी के लिए ट्रंप से डील करना आसान रहेगा।

ध्यान रहे कि ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान भारत और अमेरिका के बीच रक्षा संबंध अच्छे रहे हैं। पिछले कार्यकाल में ट्रंप रक्षा संबंधों को मजबूती देने के लिए काफी सक्रिय दिखे थे। क्वाड एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान का गठजोड़ है। भारत के साथ हथियारों के निर्यात, संयुक्त सैन्य अभ्यास और तकनीकी स्थानांतरण में दोनों देशों के बीच बेहतर तालमेल बन सकता है। ऐसा होने पर यह चीन और पाकिस्तान के विरुद्ध भारत की स्थिति अधिक मजबूत कर सकता है।

बांग्लादेश के सवाल पर ट्रंप ने खुलकर भारत का समर्थन किया। उन्होंने दीपावली के अवसर पर अपने बयान में बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर प्रश्न उठाया था। उन्होंने बांग्लादेश में हिन्दुओं के विरुद्ध हिंसा पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा था कि मैं बांग्लादेश में हिन्दू, ईसाई और दूसरे अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिंसा और भीड़ की लूट की कड़ी निंदा करता हूं। इस समय बांग्लादेश में पूरी तरह अराजकता की स्थिति है। उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि अगर वह अमेरिका के राष्ट्रपति होते तो ऐसा कतई नहीं होने देते। इससे पता चलता है कि बांग्लादेश के मुद्दे पर अमेरिका की रणनीति बदलेगी।

भारत के लिए सर्वाधिक सुखद बात यह है कि पहले कार्यकाल के दौरान डोनाल्ड ट्रंप के भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अच्छे संबंध रहे हैं। ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान भी भारत को कई बार अपना अच्छा मित्र बताया था। ऐसी स्थिति में सब कुछ निर्भर करेगा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति, उनके साथ मुद्दों को डील करने की कूटनीति और रणनीति पर।

विश्व में इस समय चलने वाले रूस-यूक्रेन युद्ध के बंद होने की संभावना भी बढ़ गई है और बदली परिस्थितियों में संभव है कि कोई नया युद्ध भी न छिड़े। इसके अलावा कनाडा के राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो जो अमेरिका के दम पर बहुत उछलते थे और भारत के विरोध में काम कर रहे थे, अब उनको ताकत मिलना बंद हो जाएगी।

यहां पर मैं एक बात की विशेष रूप से चर्चा करना चाहूंगा कि कमला हैरिस की हार से भारत के अंदर लेफ्ट लिबरल तत्वों अथवा अर्बन नक्सल तत्वों को गहरा झटका लगा है। दरअसल, कमला हैरिस को जिताने और ट्रंप को हराने के पीछे जॉर्ज सोरोस जैसी विदेशी ताकतों की फंडिंग और अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा और पूर्व उप राष्ट्रपति हिलेरी क्लिंटन जैसी ताकतें काम कर रही थीं। अगर कमला हैरिस चुनाव जीत जातीं तो उनकी योजना अंधाधुंध फंडिंग कर भारत में गृह युद्ध जैसे हालात पैदा करने की थी। लेकिन ट्रंप की जीत से ऐसी ताकतों में घोर निराशा एवं हताशा है।

हालांकि ऐसा भी नहीं है कि ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के बाद भारत के लिए सब कुछ सुखद ही रहने वाला है। यहां पहले दो बातों की चर्चा करुंगा। पहला, अमेरिका से आयात होने वाले हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिल पर ट्रंप ने भारत को टैरिफ घटाने या हटाने को कहा था। दूसरा ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में अमेरिकी उद्योगों को संरक्षण देने की नीति अपनाई थी। प्रश्न है कि क्या ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद भारत को लेकर राष्ट्रपति बाइडन की जो नीतियां थीं, वो बदल जाएंगी?

इसके अलावा पिछले कार्यकाल में ट्रंप का आप्रवासन पर कठोर रुख विशेषकर एच-1 बी वीजा पर रहा था। प्रशासन ने विदेशी कामगारों के लिए वेतन कम करने और अतिरिक्त प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया था, जिससे भारतीय आईटी पेशेवरों और टेक्नोलॉजी कंपनियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। यदि यह नीति फिर से लागू होती है, तो इसका प्रतिकूल असर भारतीय प्रोफेशनल्स पर पड़ सकता है।

लेकिन भारत के लिए सर्वाधिक सुखद बात यह है कि पहले कार्यकाल के दौरान डोनाल्ड ट्रंप के भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अच्छे संबंध रहे हैं। ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान भी भारत को कई बार अपना अच्छा मित्र बताया था। ऐसी स्थिति में सब कुछ निर्भर करेगा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति, उनके साथ मुद्दों को डील करने की कूटनीति और रणनीति पर। ■

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत के लिए अवसर और चुनौतियां

एन. सी. बिपिन्द्र
अध्यक्ष, लॉ एंड सोसाइटी अलायंस, नई दिल्ली

जैसे-जैसे अमेरिका और चीन के बीच वर्चस्व की लड़ाई बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे भारत के पास अब एक और ध्रुव के रूप में उभरने के लिए राजनीतिक, सैन्य, कूटनीतिक और आर्थिक ताकत में बढोतरी हो रही है। इसलिए भारत एक बार फिर वैश्विक दक्षिण देशों का नेतृत्व कर वैश्विक व्यवस्था को बहुध्रुवीय व्यवस्था में बदलाव का सारथी बनेगा।

स्थापित राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती देने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है और वैश्विक राजनीति भी इससे अलग नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित में कार्य करता है। यदि कोई राष्ट्र एक महाशक्ति है, तो वह राष्ट्रों के पदानुक्रम में यथास्थिति बनाए रखना चाहेगा और विश्व राजनीति में नंबर एक बना रहना चाहेगा। उसका महाशक्ति होना विश्व व्यवस्था को उसकी सनक और इच्छा के अनुसार रूप देने के लिए राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति प्रदान करता है। यह महाशक्ति अपने निर्विवाद नेतृत्व की स्थिति को बनाए रखने के लिए वैश्विक व्यवस्था में अन्य देशों पर दबाव डालती है।

लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पिछले 80 वर्षों में विश्व व्यवस्था में भारी बदलाव आया है, जिसके दौरान दो महाशक्तियां लगभग समान शक्ति के साथ उभरीं। इसके कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी गुट और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले समाजवादी गुट के बीच चार दशक तक लंबा शीत युद्ध चला। जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक व्यवस्था द्विध्रुवीय बन गई। 1991 में समाप्त हुए शीत युद्ध के दौर में दुनिया के लगभग आधे देश दोनों गुट में से किसी एक गुट का हिस्सा थे। लेकिन उस समय की वैश्विक-राजनीति में एक तीसरा ध्रुव भी था। इस तीसरे ध्रुव को कहा गया गुटनिरपेक्ष आंदोलन। इसका नेतृत्व भारत ने किया था, जो उस समय एक विकासशील राष्ट्र था, जिसके पास बहुत अधिक राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य या राजनयिक ताकत नहीं थी। फिर भी, इसे उन वैश्विक दक्षिण देशों के नेता के रूप में मान्यता दी गई जो मुख्य रूप से गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्य थे।

शीत युद्ध युग की समाप्ति के बाद से तीन दशकों से अधिक समय में पूर्व सोवियत देशों की सामूहिक शक्ति के पतन के साथ, वैश्विक राजनीतिक शक्ति के घटकों में भारी उथल-पुथल हुई। पिछले लगभग एक दशक में अमेरिकी केन्द्रित विश्व व्यवस्था के लिए कम्युनिस्ट चीन एक स्पष्ट चुनौती के रूप में उभरा है।

दूसरी ओर, सोवियत संघ, जिसकी ओर भारत शीत युद्ध के दौर में झुका था क्योंकि अमेरिकी गुट भारत के कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान का समर्थन करता था, सोवियत संघ के पतन और 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने अपनी रणनीति बदल दी। जैसे-जैसे अमेरिका और चीन के बीच वर्चस्व की लड़ाई बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे भारत के पास अब एक और ध्रुव के रूप में उभरने के लिए राजनीतिक, सैन्य, कूटनीतिक और आर्थिक ताकत में बढ़ोतरी हो रही है। इसलिए भारत एक बार फिर वैश्विक दक्षिण देशों का नेतृत्व कर वैश्विक व्यवस्था को बहुध्रुवीय व्यवस्था में बदलाव का सारथी बनेगा।

भारत के लिए अवसर

राजनीतिक : भारत विश्व स्तर पर एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जिसे संयुक्त राष्ट्र निकायों में भूमिका के लिए अधिकांश देशों का भारी समर्थन मिलता है। वैश्विक सुरक्षा पर सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् सहित उसकी महत्वपूर्ण शाखाओं के चुनाव के दौरान भारत को सबसे

अधिक वोट मिलते हैं। संयुक्त राष्ट्र में भारत के समर्थन में यह सर्वसम्मति आने वाले दिनों में मानवता से संबंधित सभी मामलों पर दुनिया का नेतृत्व करने के लिए इसकी जबरदस्त स्वीकार्यता को दर्शाती है। मजबूत लोकतांत्रिक चरित्र के साथ भारत की परिपक्व राजनीति राष्ट्र को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में नेतृत्व की स्थिति में अपनी भूमिका निभाने के लिए आवश्यक योग्यता प्रदान करती है। पिछले एक दशक से केंद्र में एक स्थिर लोकतान्त्रिक सरकार भारत को दुनिया के समक्ष बेहतर रूप से उभरने हेतु और अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के अपने वैश्विक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास प्रदान कर रही है।

आर्थिक : 2014 के बाद से भारत आज सालाना आधार पर छह प्रतिशत से अधिक की जीडीपी वृद्धि के साथ दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। 2024 में जीडीपी के लगभग 4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को छूकर भारत ने अपने को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने में सक्षम बनाया है। वैश्विक आर्थिक पूर्वानुमान फर्मों और वित्तीय संस्थानों के अनुसार भारत अगले तीन से पांच वर्षों में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने के लिए तैयार है। यह भारत को वैश्विक विकास की प्राथमिकताओं में शामिल होने और पूंजीवाद और समाजवाद जैसे मौजूदा प्रमुख मॉडलों के लिए वैकल्पिक आर्थिक मॉडल प्रदान करने के लिए जरूरी आत्मविश्वास प्रदान करता है।

बहुपक्षवाद : अमेरिका और चीन के बीच वर्चस्व की लड़ाई से जूझते हुए, भारत आज जी-20, ब्रिक्स, एससीओ और ऐसे अन्य संस्थागत बहुपक्षीय मंचों पर आवश्यक संतुलन की भूमिका निभा रहा है। भारत आज क्वाड में एक महत्वपूर्ण सदस्य है, जो एक अनौपचारिक गठन है। यह लोकतंत्र, नौवहन की स्वतंत्रता, सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय नियम-आधारित व्यवस्था के सिद्धांतों पर केंद्रित है। जिसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान सहित सभी इंडो-पैसिफिक देश शामिल

भारत सतत् विकास लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए और विकासशील देशों के लिए आर्थिक विकास के सन्दर्भ में जलवायु परिवर्तन सुधारों को न्यायसंगत आधार पर आगे बढ़ाने वाले अग्रणी देशों में से एक है।

हैं। भारत के आसियान देशों के साथ मधुर संबंध हैं। चीन की विस्तारवादी प्रवृत्ति के कारण उपजे समुद्र-क्षेत्रीय विवादों से जुड़ी समस्याओं से निपटने में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की क्षमता की दृष्टि से भारत महत्वपूर्ण भूमिका में है। पश्चिमी देशों और रूस-चीन जोड़ी के बीच वैश्विक राजनीति और प्रतिद्वंद्वियों को आसानी से पार करने की भारत की क्षमता एक महत्वपूर्ण कौशल है जो विश्व व्यवस्था में संतुलन ला सकती है और शांति बनाए रख सकती है। भारत ने दो देशों के बीच चल रहे युद्ध में रूस और यूक्रेन के बीच संभावित बातचीत को सक्षम बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पश्चिमी एशिया में शांति बहाल करने हेतु बातचीत की भूमिका निभाने के लिए भारत के लगभग सभी इस्लामी और अरब देशों के अलावा, इजरायल और फिलिस्तीन दोनों के साथ भी अच्छे संबंध हैं। इस बात पर लगभग सब एकमत है कि जब भी वैश्विक बहुपक्षीय निकाय के बड़े पैमाने पर सुधारों को लागू किया जाएगा तो भारत को यूएनएससी में एक स्थायी सीट मिलनी चाहिए।

भारत के लिए चुनौतियां

चीन का विस्तारवाद : वियतनाम, ताइवान, जापान और फिलीपींस जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई और पूर्वी एशियाई देशों की तरह भारत भी कम्युनिस्ट चीन की विस्तारवादी नीतियों का शिकार है। चीन भारत के एक बड़े क्षेत्र पर अपना दावा करता है और जैसा कि 2020 और 2024 के बीच पूर्वी लद्दाख क्षेत्र में देखा गया था। वह अपने क्षेत्रीय अतिक्रमण के लिए सैन्य नीतियों का अनुसरण कर रहा है। यह सैन्य मामला है, जबकि चीन ने भारत में अपना सस्ता सामान डंप करने के लिए द्विपक्षीय व्यापार का उपयोग किया जिससे देश के भीतर घरेलू उद्यम खत्म हो रहे हैं। भारत को चीन से पूरी तरह अलग होने के लिए आर्थिक और सैन्य दोनों मोर्चों पर जवाबी कार्रवाई करने की जरूरत है। सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत को वास्तविक नियंत्रण रेखा को भारत-तिब्बत सीमा कहना चाहिए, न कि चीन-भारत सीमा। भारत को यथासंभव चीन के साथ सभी गैर-जरूरी और गैर-रणनीतिक द्विपक्षीय व्यापार बंद कर देना चाहिए। तीसरी सबसे महत्वपूर्ण कार्रवाई यह सुनिश्चित करना है कि भारत चीन की छद्म युद्ध रणनीति का शिकार न हो, जो मनोवैज्ञानिक, मीडिया और साइबर युद्ध के माध्यम से दुश्मन को हराने पर केंद्रित है। भारत वैश्विक स्तर पर एकमात्र राष्ट्र है जो चीनी क्षेत्र के अंदर जमीनी स्तर पर सैन्य कार्रवाई कर सकता है।

पड़ोसी गतिविधियां : भारत की वर्तमान सरकार ने 2014 से नेबरहुड फर्स्ट नीति का सही ढंग से पालन किया है। हालांकि, यह नीति अभी तक सफल नहीं हुई है, क्योंकि भारत के पड़ोस के राष्ट्र चीन के करीब आते जा रहे हैं और भारत विरोधी नीतियों का पालन कर रहे हैं, चाहे वह मालदीव हो, नेपाल हो, बांग्लादेश या श्रीलंका। इन पड़ोसी देशों की राजनीतिक स्थिति दर्शाती है कि इनमें भारत विरोधी राजनीतिक ताकतें स्वीकार्यता प्राप्त कर रही हैं और हाल ही में मालदीव, नेपाल और श्रीलंका के चुनावों में या बांग्लादेश की उथल-पुथल के माध्यम से भी यह सिद्ध हुआ है कि ये शक्तियां सत्ता में आ रही हैं। पाकिस्तान के अंतर्निहित भारत-विरोधी पूर्वाग्रह और 1947 में उसके जन्म के बाद से उसकी शत्रुता के कारण उसके साथ जुड़ने का सवाल ही नहीं है। पश्चिम एशिया के अलावा दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया जैसे विस्तारित पड़ोस भारत के विश्व शक्ति के रूप में उभरने की कुंजी है। वैश्विक व्यवस्था में बेहतर स्थिति के लिए इन देशों के साथ हाथ मिलाने पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। ■

संस्कृति और आंचलिकता का माह

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

पर्व और त्यौहार न केवल सनातन संस्कृति के हस्ताक्षर हैं बल्कि प्रकृति, परंपरा और अध्यात्म के संगम भी हैं। इसलिए ये उत्सव हम सभी को अपनी जड़ों से जोड़कर शीत ऋतु में खुशियों की गर्माहट लाते हैं।

पर्व या त्यौहार हमारी संस्कृति के अभिन्न हिस्से हैं। हर ऋतु, हर मास के यही त्यौहार भारत की विविधता को प्रतिबिंबित करते हैं। क्योंकि धर्म और लोक कथाओं के बाद उत्सव की उत्पत्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा प्रकृति एवं जन समुदाय की परंपराओं पर आधारित है। जीवंत सामुदायिक भावना को दर्शाते इस माह के उत्सव, आंचलिकता और आध्यात्मिक पर्यटन के लिए सर्वोपरि हैं। इन उत्सवों में पारंपरिक नृत्य, गायन की अनूठी झलक देखने को मिलती है। विद्वानों का मानना है जो जनजातियां नाचती गाती नहीं-उनकी संस्कृति मर जाती है। इसी क्रम में श्री क्षेत्र उत्सव पुरी की परंपराओं को जीवित करती अंतरराष्ट्रीय रेत की कला, रेत के कलाकारों की रचनात्मकता को दर्शाती है। यह महोत्सव कोणार्क नृत्य महोत्सव के साथ आयोजित किया जाता है। इसी तरह हॉर्नबिल उत्सव, नागालैंड की कृषि की लोककथाओं से समृद्ध रहते हैं। यह उत्सव हॉर्नबिल पक्षी के नाम पर है। इसमें धार्मिक अनुष्ठान के साथ ही बहादुर नायकों की प्रशंसा के गीत गाए जाते हैं। यह पर्व लोकनृत्य और कहानियों से गुथा हुआ है। इस उत्सव में नागा संस्कृति देखने के लिए देश-विदेश से पर्यटक आते हैं।

कुंभलगढ़ उत्सव को कुंभलगढ़ किले में मनाया जाता है। इसमें अलग-अलग संस्कृतियों से जुड़े कार्यक्रम प्रदेश की परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। पेरुमथट्टा थेरवाद महोत्सव 6 से 15 दिसम्बर केरल के दक्षिण भाग में मनाया जाता है। जहां कलाकारों को देवताओं और आत्माओं का अवतार माना जाता है। उनकी नृत्य गायन कला, प्राचीन पौराणिक कहानियों को दर्शाती हैं। इसी तरह मटकोर पूजन का अत्यधिक महत्व है। इसमें श्री राम जानकी विवाह से पहले जनकपुर नेपाल में जगह-जगह मटकोर पूजन का आयोजन होता है। अयोध्या से श्री राम की बारात जनकपुर आती है। यह विवाह पंचमी से पहले विवाह की एक रस्म है- कमला नदी पूजन की, उसे मटकोर कहते हैं। यह उत्सव आस्था और मिलन का संगम है। लोक कथा है कि सीता जी के विवाह में मटकोर (कमला पूजन) में कमला माई की मिट्टी लाई गई थी और सीता जी के नेत्र से कमला जी उदय हुई थीं। सीता जी की प्रिय सखी कमला हैं। मटकोर पूजन का प्रश्न उत्तर में एक लोकगीत है, जिसे मिथिला की महिलाएं इस अवसर पर गाती हैं। "कहां माँ पियर माटी, कहाँ मटकोर रे। कहां माँ के पांच माटी, खोने जाएं।"

इसी क्रम में गीता जयंती का उत्सव मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पर कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर के आस-पास इसकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां के 75 तीर्थों पर इस दौरान गीता पूजन, गीता यज्ञ, अंतरराष्ट्रीय गीता सेमिनार, वैश्विक गीता पाठ, संत सम्मेलन आदि दिव्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। तीर्थयात्री कुरुक्षेत्र की 48 कोसी परिक्रमा करते हैं। गीता जयंती के दिन श्रीमद्‌भगवद् गीता के अलावा भगवान श्री कृष्ण और वेद व्यास की भी पूजा की जाती है। ऐसी भी मान्यता है कि यही ज्योतिसर तीर्थ वह पावन स्थल है, जहां भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता रूपी अमृतपान कराया था। यहां एक प्राचीन सरोवर और पवित्र अक्षयवट है, जो भगवान श्री कृष्ण के गीता उपदेश का एकमात्र साक्षी माना जाता है।

चंपा षष्ठी महाराष्ट्र का प्रमुख त्यौहार है। यह भगवान खंडोबा के भक्तों द्वारा मनाया जाता है। मान्यता के अनुसार भगवान खंडोबा को योद्धा देवता के रूप में पूजा जाता है। इसी तरह आंचलिक लोक कथाओं से पूर्ण चुम्फा महोत्सव तंगुल नागाओं द्वारा मणिपुर में मनाया जाने वाला फसल उत्सव है। इसमें पुरुष और महिलाएं विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शनों और अनुष्ठानों में एक साथ भाग लेते हैं। उत्सव का समापन भव्य यात्रा के साथ होता है।

दत्तात्रेय जयंती में त्रिगुण स्वरूप यानि ब्रह्मा, विष्णु और शिव के सम्मिलित स्वरूप की आराधना की जाती है। इसके अलावा भगवान दत्तात्रेय जी की गुरु रूप में पूजा की जाती है। भगवान दत्तात्रेय, महर्षि अत्रि और उनकी सहधर्मिणी अनुसूया के पुत्र थे। इनके पिता महर्षि अत्रि सप्तऋषियों में से एक हैं और माता अनुसूया को सतीत्व के रूप में जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि दत्तात्रेय नित्य सुबह काशी में गंगा जी में स्नान करते थे। इसी कारण काशी के मणिकर्णिका घाट की दत्त पादुका, दत्त भक्तों के लिए पूजनीय स्थान है। इसके अलावा मुख्य पादुका स्थान कर्नाटक के बेलगाम में स्थित है। देशभर में दत्तात्रेय को गुरु के रूप में मानकर इनकी पादुका को नमन किया जाता है। भगवान दत्त के नाम पर दत्त संप्रदाय का उदय हुआ। नृसिंहवाडी दत्त भक्तों की राजधानी के लिए जाना जाता है। कृष्णा और पंचगंगा नदियों के पवित्र संगम पर स्थित, महाराष्ट्र के प्रसंगों में इसका व्यापक महत्व है। इसके अलावा दक्षिण भारत सहित पूरे देश में अनेक प्रसिद्ध मंदिर हैं। माउंट आबू, राजस्थान में श्री गुरु दत्तात्रेय मंदिर हैं जहां हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते रहते हैं।

इसी तरह गोवा का सनबर्न फेस्टिवल, संगीत और नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। इसी क्रम में संगीत प्रेमियों के लिए, माउंट आबू विंटर फेस्टिवल (राजस्थान), शिल्पग्राम महोत्सव, उदयपुर लोकनृत्य, संगीत, घूमर, गैर और धाप, डांडिया और कव्वाली का आनन्द लेने पर्यटक पहुंचते हैं। ऐसे पर्व में एक ही जगह पर देशभर की संस्कृति की झलक, कला, खान-पान और वेशभूषा पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसी तरह रण उत्सव (गुजरात), पौष मेला शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल) में मनाया जाता है। फसल की कटाई का प्रतीक यह मेला, बंगाल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा शुरु किया गया पौष मेला बाउल संगीत, पारंपरिक शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।

पौष मेला शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में मनाया जाता है। फसल की कटाई का प्रतीक यह मेला, बंगाल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा शुरु किया गया पौष मेला बाउल संगीत, पारंपरिक शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।

मंडला पूजा 26 दिसम्बर को केरल के अयप्पा मंदिर में मनाया जाने वाला 41 दिवसीय उत्सव है। इस तपस्या उत्सव का समापन 26 दिसम्बर को मंडला कलम के रूप में होता है। इसमें पड़ोसी राज्यों से भी श्रद्धालु मंडला पूजा और 'मकर विलक्कु' सबरीमाला अयप्पा मंदिर में आयोजित दो प्रमुख कार्यक्रमों में शामिल होते हैं। अयप्पा के अनुयायी सूर्य की उपासना करते हैं। तिल और गुड़ का भोग लगाते हैं। भोजन, दान दक्षिणा जरूरतमंदों को देते हैं जिससे समाज में सद्भावना बढ़ती है। परिवार और मित्रों के साथ भोजन कर त्यौहार का आनंद लेते हैं। कई रोचक और पौराणिक कथाएं इस त्यौहार के महत्व को दर्शाती हैं। विष्णुपुर महोत्सव, 27 से 31 दिसम्बर के बीच मदनमोहन मंदिर, विष्णुपुर के पास पश्चिम बंगाल में आयोजित यह महोत्सव अपने खूबसूरत टेराकोटा मंदिरों, सिल्क की साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी विशेषता स्थानीय हस्तशिल्प और संगीत है। विष्णुपुर अपने स्वयं के शास्त्रीय संगीत के घराने के लिए भी प्रसिद्ध है। इस तरह शीत ऋतु में भी ये त्यौहार परंपरा, श्रद्धा और आंचलिकता के संगम हैं। ■

प्राचीन धरोहरों की खोज में अवसर

अदिति सिंह
छात्रा, लॉ
दिल्ली मेट्रोपोलिटन एजुकेशन

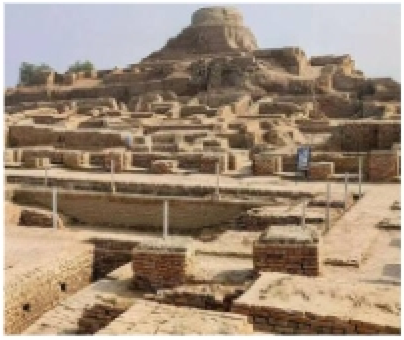

पुरातत्व विज्ञान में करियर अपने स्व को बेहतर तरीके से समझने और जानने के लिए एक आकर्षक और रोमांच का संगम है। जिन्हें अपनी संस्कृति, धर्म, इतिहास, प्रगतिशील प्राचीन परंपराओं और धरोहरों में गहरी रुचि है, उनके लिए यह मार्ग समग्रता से अनेक विकल्प उपलब्ध कराता है। पुरातत्व विज्ञान का उद्देश्य प्राचीन समय की सभ्यताओं के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को समझना है। पुरातत्वविद् प्राचीन अवशेषों और स्थलों की खोज कर उन्हें संरक्षित करने का कार्य करते हैं, जिससे मानव इतिहास के कई अनसुलझे पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है।

पुरातत्व के अध्ययन क्षेत्र में बहुआयामी और सर्वसमावेशिता का व्यापक विस्तार होता है, जैसे कि मानव विज्ञान, प्राचीन स्थापत्य कला, शिलालेख, अभिलेख, मूर्तियां, लिपियां, भूविज्ञान और संग्रहालय का अध्ययन आदि। यह क्षेत्र मुख्य रूप से खुदाई में मिली पुरानी वस्तुओं के अध्ययन, संरचनाओं का विश्लेषण और पुरातात्विक अवशेषों का संग्रह करने के लिए तकनीकी विधियों का प्रयोग करता है। इन खोजों के आधार पर प्राचीन सभ्यताओं की जीवनशैली, उनके सामाजिक और धार्मिक ढांचे, कला और वास्तुकला का गहन अध्ययन किया जाता है। भारत में पुरातत्व विज्ञान का समृद्ध इतिहास है, जहां वैदिक सभ्यता, सिंधु घाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और ऐसे कई पौराणिक और धार्मिक स्थल पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। जिनमें रुचि और गहन अध्ययन आपके सपनों को साकार कर सकता है। इस क्षेत्र में अध्ययन के लिए भारत में कई प्रतिष्ठित संस्थान हैं।

पुरातात्विक स्थल अतीत की स्वर्णिम जानकारी के महत्वपूर्ण और अद्वितीय स्रोत हैं। जिनसे तत्कालीन सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, जलवायु परिवर्तन और विकास के अनमोल तथ्य मिलते हैं। इसलिए पुरातत्व विज्ञान स्व के विकास के साथ-साथ आत्मनिर्भरता का भी सर्वोत्तम विकल्प है।

दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, डेक्कन कॉलेज पोस्ट-ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्कियोलॉजी पुरातत्व में करियर की शुरुआत एक स्नातक पाठ्यक्रम, जैसे बी.ए. या बी. एससी. (पुरातत्व विज्ञान) से की जा सकती है। इसके बाद मास्टर डिग्री (एम.ए. या एम. एससी.) और उच्च स्तर पर पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। इन कोर्सेज के दौरान विद्यार्थियों को पुरातत्व सर्वेक्षण, खुदाई तकनीकों, ऐतिहासिक दस्तावेजों का विश्लेषण और आधुनिक अनुसंधान विधियों में पारंगत किया जाता है। इस तरह पुरातत्वविद् केंद्र और राज्य सरकारों की एजेंसियों में महत्वपूर्ण दायित्व के पद पर रहते हुए पुरातात्विक स्थलों के प्रबंधन, सुरक्षा और व्याख्या के लिए जिम्मेदार रहते हैं। इसके अलावा संग्रहालयों, पुरातात्विक पार्कों या ऐतिहासिक स्थलों में अवसर की भरमार रहती है। साथ ही पुरातत्वविद् कलाकृतियों के संग्रह का प्रबंधन, शिक्षा या सार्वजनिक प्रोग्रामिंग में काम कर सकते हैं। इसके अध्येता प्रशासक भी बन सकते हैं। जो शोध, संग्रह, शिक्षा और प्रदर्शनियों से संबंधित कार्यक्रमों का प्रबंधन करते हैं। कॉलेज और विश्वविद्यालय इस क्षेत्र के विशेषज्ञों को पढ़ाने के लिए नियुक्त करते हैं। शिक्षण के अलावा, अकादमिक पुरातत्वविद् अपने क्षेत्र में सक्रिय शोधकर्ता होते हैं। इस तरह पुरातत्वविद् विभिन्न परियोजनाओं के विश्लेषण और व्याख्या की देखरेख भी करते हैं और अपने काम के परिणाम प्रकाशित करते हैं। उनका शोध पुस्तकों, पत्रिकाओं और लोकप्रिय प्रकाशनों में दिखाई देता है।

इस तरह पुरातत्वविद् के रूप में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संग्रहालय, शैक्षणिक संस्थान और रिसर्च इंस्टीट्यूट में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। इसके अलावा, पुरातत्वविदों के लिए निजी क्षेत्र और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भी रोजगार की अच्छी संभावनाएं होती हैं। यूनेस्को, विश्व धरोहर समितियां और विभिन्न संग्रहालय भी पुरातत्व के क्षेत्र में विशेष योग्यता वाले लोगों को नियुक्त करते हैं। एक सफल पुरातत्वविद् बनने के लिए गहरी ऐतिहासिक समझ, अनुसंधान में रुचि, और प्राचीन धरोहरों के संरक्षण के प्रति लगाव आवश्यक है। ■

Willstrong

Energising Growth

Products / Solutions

- CCTV Surveillance System
- Perimeter Intrusion & Security
- Fire Detection System
- Gas Suppression System
- Plant Communication System
- Access Control System
- Command & Control Infrastructure
- IPABX / IP PBX System

Why Choose Us:

- SAP Enabled Processes
- Pan India Presence
- Direct Presence in 8 out of 10 IOCL Refineries
- Multiple & Large Proven Track Records in Oil & Gas Sector
- 100 Cr+ Annual Sales

Synergizing Security, Safety, Telecom, and AI: Your Turnkey Partner

Follow Us:

Contact Us:

0120 256 0650 www.willstrong.in info@willstrong.in

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

itSimple
बैकअप सरल है

BIGGEST INSPIRATION FOR RESILIENCY.

अवध में राम आए हैं

We make Resiliency work for your IT DATA under all circumstances.

Trusted by Leaders of Industry for causing IT DATA RESTORATION सरल है

CARE@ITSIMPLE.IN
M: 9810484932, 92057 83814